मेहनत से खेतों को सजाएं, वैज्ञानिक खेती अपनाएं।

# मेरीखेती

नवंबर 2026 I मूल्य: ₹49



www.merikheti.com

# विषय सूची


सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

| | |
|---|---|
| खेत खलिहान | 05 - 18 |
| बागवानी फसलें | 18- 24 |
| मशीनरी | 26 - 49 |
| कृषि सलाह | 49 - 54 |
| पशुपालन-पशुचारा | 54 - 64 |



विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

# संपादकीय

## नवंबर माह: खेती में नई संभावनाओं का समय

नवंबर का महीना भारतीय कृषि के लिए विशेष महत्व रखता है। इस समय रबी फसलों की बुवाई का कार्य तेजी से आगे बढ़ता है। गेहूं, सरसों, चना और जौ जैसी फसलों की बेहतर पैदावार के लिए किसानों को उन्नत बीजों का चयन, मिट्टी की जांच और संतुलित उर्वरक प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। समय पर बुवाई और उचित सिंचाई से फसलों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के दौर में किसानों के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, फसल विविधीकरण, जैविक खेती और कृषि यंत्रों का उचित उपयोग खेती की लागत कम करने में सहायक हो सकता है। साथ ही, पशुपालन और बागवानी को अपनाकर किसान अपनी आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित कर सकते हैं।

इस अंक के माध्यम से हमारा प्रयास है कि किसानों तक उपयोगी कृषि जानकारी, नई तकनीकों और सरकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाई जाए, ताकि खेती अधिक लाभकारी, टिकाऊ और समृद्ध बन सके।



श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

# सलाहकार मंडल



**श्री छेदालाल पाठक**
संरक्षक मार्गदर्शक



**कृष्ण पाठक**
फाउंडर, मेरीखेती



**डॉ एम सी शर्मा**
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर



**प्रो. ए पी सिंह**
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा



**डॉ. एस. के. गर्ग**
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस



**डॉ हरि शंकर गौड़**
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय



**डॉ. ओमवीर सिंह**
निदेशक बीज प्रमाणीकरण ( सेवानिवृत्त )
उत्तर प्रदेश



**डॉ उदय भान सिंह**
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान



**डॉ. अनिल कुमार सिंह**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा



**डॉ एसके सिंह**
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार



**डॉ रितेश शर्मा**
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)



**डॉ सी बी सिंह**
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा



**तेजपाल सिंह**
प्रगतिशील किसान

# गेंहू की टॉप 10 किस्मों से किसान बढ़ा सकते हैं 80 क्विंटल तक पैदावार - जानें, पूरी जानकरी




## गेंहू की किस्मों से सूखी और नम दोनों जमीनों पर मिलेगी बेहतरीन पैदावार

रबी सीजन के दौरान किसान अधिक उपज पाने के लिए ऐसी गेहूं की किस्में खोजते रहते हैं, जो कम लागत में बेहतर उत्पादन दें। अच्छी किस्म चुनना ही अधिक पैदावार और लाभ का पहला कदम होता है। ऐसे में गेहूं की कई उन्नत किस्में विकसित की गई हैं, जो न केवल उच्च उपज देती हैं, बल्कि रोगों के प्रति सहनशील, जल्दी पकने वाली और गुणवत्ता में भी श्रेष्ठ हैं। यहां हम आपको गेहूं की टॉप 10 उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी दे रहे हैं, जिनकी पैदावार किसानों की आय बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

### 1. एच आई 8759 (पूसा तेजस)

यह किस्म मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान के कोटा और उदयपुर क्षेत्र, तथा उत्तर प्रदेश के झांसी मंडल के लिए उपयुक्त है।

- उपज क्षमता: 56.9 से 75.5 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता समय: लगभग 117 दिन
- खासियत: यह किस्म काले और भूरे रतुए जैसे फफूंद रोगों से अच्छी तरह लड़ पाती है तथा उच्च तापमान को भी सहन कर लेती है।

### 2. एच डी 3236

यह किस्म पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के लिए लाभकारी है।

- उपज क्षमता: 57.5 से 79.6 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता समय: 142 दिन
- गुणवत्ता: इसमें लगभग 12.8% प्रोटीन पाया जाता है।
- रोग प्रतिरोध: यह किस्म कनाल बंट, फ्लैग स्मट आदि रोगों का सामना करने में सक्षम है।

### 3. एच डी 3249

उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम के किसान इस किस्म से अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

- उपज क्षमता: 48.8 से 65.7 क्विंटल/हेक्टेयर
- पकने का समय: मात्र 122 दिन
- पोषण महत्व: इसमें 10.7% प्रोटीन और 42.5 ppm आयरन पाया जाता है, जिससे यह पोषक की दृष्टि से काफी उपयोगी है।

### 4. एच आई 1636 (पूसा वकूला)

- यह किस्म मुख्यतः मध्य भारत के कृषि क्षेत्रों में अधिक सफल है।
- उपज क्षमता: 56.6 से 78.8 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता: लगभग 119 दिन
- खासियत: यह रोग प्रतिरोधी होती है तथा इससे बनी चपाती और बिस्कुट का स्वाद व गुणवत्ता बेहतरीन होती है।

### 5. एच डी 3406 (उन्नत एचडी 2967)

- उपज क्षमता: 54.7 से 70.4 क्विंटल/हेक्टेयर
- रोग प्रतिरोध: करनाल बंट, पत्ती झुलसा और पीली रतुआ जैसे रोगों से सुरक्षा
- विशेषता: दाने बड़े, चमकदार और भरे हुए होते हैं, जिससे आटे की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

### 6. एच डी 3369

यह किस्म विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में आसानी से अनुकूल हो जाती है।

- उपज क्षमता: 50.6 से 71.4 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता समय: 149 दिन
- रोग प्रतिरोध: यह पत्ती झुलसा, करनाल बंट और रतुआ रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है।

### 7. एच आई 1650 (पूसा ओजस्वी)

- उपज क्षमता: 57.2 से 73.8 क्विंटल/हेक्टेयर
- पकने का समय: केवल 118 दिन (कम अवधि वाली किस्म)
- गुणवत्ता: दाने चमकदार और मोटे होते हैं, जिससे आटा बहुत अच्छा बनता है।

### 8. एच आई 1653 (पूसा जागृति)

- उपज क्षमता: 51.1 से 69.3 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता समय: लगभग 148 दिन
- रोग प्रतिरोध: करनाल बंट, पत्ती झुलसा, भूरे और पीले रतुए से सुरक्षा प्रदान करती है।

### 9. एच आई 1654 (पूसा आदिति)

- उपज क्षमता: 51.8 से 72.9 क्विंटल/हेक्टेयर
- परिपक्वता: 148 दिन
- खासियत: कम सिंचाई में भी अधिक उपज देती है तथा सूखा सहनशील है।

### 10. एच आई 8826 (पूसा पौष्टिक)

- उपज क्षमता: 48.8 से 73.7 क्विंटल/हेक्टेयर
- पकने का समय: केवल 108 दिन
- पोषण महत्व: इस किस्म में जिंक, आयरन और प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है।
- रोग प्रतिरोध: करनाल बंट, पत्ती झुलसा और रतुआ रोगों से फसल की रक्षा करती है।

सही किस्म का चयन, उचित समय पर बुवाई, संतुलित खाद प्रबंधन और रोग नियंत्रण अपनाकर किसान प्रति हेक्टेयर 70 से 80 क्विंटल तक गेहूं की उपज प्राप्त कर सकते हैं। इन उन्नत किस्मों का उपयोग कर किसान न केवल उत्पादन बढ़ा सकते हैं, बल्कि बाजार में अच्छी गुणवत्ता का दाना प्राप्त कर बेहतर लाभ अर्जित कर सकते हैं।

MASSEY FERGUSON







# MASSEY FERGUSON
# 254 DYNASMART

# चने की अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान अपनाएं यह उन्नत बुवाई विधि




## रबी सीजन में चने की खेती से करें ज्यादा कमाई – जानें वैज्ञानिक बुवाई पद्धति

तबीजी फार्म अजमेर के उप निदेशक कृषि (शस्य) श्री मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि चना रबी सीजन की एक प्रमुख दलहनी फसल है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के साथ-साथ किसानों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी है। उन्होंने कहा कि चने की खेती के लिए ऐसी भूमि उपयुक्त रहती है जो लवण और क्षार रहित, जल निकास वाली और उपजाऊ हो। वर्तमान समय चने की बुवाई के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है। यदि किसान बुवाई से पहले मृदा उपचार (Soil Treatment) एवं बीजोपचार (Seed Treatment) करें तो फसल को कीटों व रोगों से प्रभावी रूप से बचाया जा सकता है, जिससे उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। उन्होंने किसानों को यह भी सलाह दी कि कृषि रसायनों का उपयोग करते समय सुरक्षा उपकरणों का अवश्य प्रयोग करें — जैसे पूरे कपड़े, दस्ताने, मास्क और जूते पहनें, ताकि स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव न पड़े।

## बीजोपचार और भूमि उपचार से बढ़ेगी पैदावार

कृषि अनुसंधान अधिकारी (पौध व्याधि) डॉ. जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि बीजोपचार फसल को बीज और मिट्टी जनित रोगों एवं कीटों से बचाने के साथ-साथ बीज अंकुरण की दर बढ़ाने में मदद करता है। चने की फसल में अक्सर जड़ गलन (Root Rot), सूखा जड़ गलन (Dry Root Rot) और उकठा (Wilt) जैसे रोगों का प्रकोप होता है, जो उत्पादन को 30–40% तक घटा सकते हैं। इन रोगों से बचाव के लिए किसानों को फसल चक्र (Crop Rotation) अपनाना चाहिए और खेत की मिट्टी को ट्राईकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए।

### भूमि उपचार की विधि:

बुवाई से पहले 2.5 किलो ट्राईकोडर्मा को 100 किलो आर्द्र गोबर की खाद में अच्छी तरह मिलाएं और इस मिश्रण को 10–15 दिनों तक छाया में रखें। इसके बाद बुवाई के समय प्रति हेक्टेयर की दर से यह खाद मिट्टी

में मिला दें। इससे मिट्टी में रोगाणु नष्ट होते हैं और पौधों की जड़ें मजबूत बनती हैं।

## बीजोपचार की विधि:

बुवाई से पहले बीजों को निम्न में से किसी एक उपचार से तैयार करें:

- कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम + थाइरम 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज, या
- कार्बोक्सीन 37.5% + थाइरम 37.5% (2 ग्राम प्रति किलो बीज), या
- ट्राईकोडर्मा 10 ग्राम प्रति किलो बीज

इन उपचारों से बीज रोगमुक्त रहेंगे और अंकुरण दर 90% तक बढ़ेगी।

## कीट नियंत्रण के लिए अपनाएं ये उपाय

सहायक कृषि अनुसंधान अधिकारी (कीट) डॉ. सुरेश चौधरी के अनुसार, चने की फसल में दीमक, कटवर्म और वायरवर्म जैसे कीटों का प्रकोप अधिक देखा जाता है।

इनसे बचाव के लिए किसानों को चाहिए कि वे अंतिम जुताई से पूर्व क्यूनालफॉस 1.5% चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में भुरकाव करें।

इसके अलावा बीजों को फिप्रोनिल 5 एस.सी. (10 मि.ली./किलो बीज) या इमीडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. (5 मि.ली./किलो बीज) से उपचारित करने पर दीमक एवं अन्य मिट्टी जनित कीटों से फसल की प्रारंभिक अवस्था में प्रभावी सुरक्षा मिलती है।

## खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

कृषि अनुसंधान अधिकारी (रसायन) डॉ. कमलेश चौधरी ने बताया कि चने की अधिक उपज के लिए संतुलित पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी है।

बुवाई से पूर्व बीजों को तरल आधारित राईजोबियम, फॉस्फेट सॉल्युबिलाइजिंग बैक्टीरिया (PSB), गंधक एवं जिंक घोलक जैसे जैव उर्वरकों की 3 से 5 मिली लीटर प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

ये सूक्ष्मजीव मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिरीकरण, फॉस्फोरस घुलनशीलता और सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाते हैं।

कृषि अनुसंधान अधिकारी (शस्य) रामकरण जाट ने बताया कि चने की अधिकतम पैदावार के लिए मृदा परीक्षण आधारित पोषण प्रबंधन अपनाना चाहिए।

- असिंचित क्षेत्रों में: 10 किलो नाइट्रोजन (N) + 25 किलो फास्फोरस ($P_2O_5$) प्रति हेक्टेयर
- सिंचित क्षेत्रों में: 20 किलो नाइट्रोजन (N) + 40 किलो फास्फोरस ($P_2O_5$) प्रति हेक्टेयर

इन उर्वरकों को आखिरी जुताई के समय 12–15 सेंटीमीटर की गहराई पर मिट्टी में मिला देना चाहिए ताकि पौधों को पोषक तत्व शुरू से ही मिल सकें।

## खरपतवार नियंत्रण के उपाय

चना की सिंचित फसल में प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं, जिससे पैदावार प्रभावित होती है। इसे नियंत्रित करने के लिए:

- पेन्डीमिथेलीन 30 ई.सी. – 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर, या
- पेन्डीमिथेलीन 38.7 सी.एस. – 1.9 लीटर प्रति हेक्टेयर

इनमें से किसी एक शाकनाशी को 600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के बाद लेकिन बीज अंकुरण से पहले छिड़काव करें। इससे खेत 25–30 दिनों तक खरपतवार मुक्त रहता है, और पौधों की वृद्धि समान रूप से होती है।

## निष्कर्ष

यदि किसान उपरोक्त उन्नत कृषि तकनीकों का पालन करें — जैसे बीजोपचार, भूमि उपचार, फसल चक्र, संतुलित उर्वरक उपयोग और उचित खरपतवार नियंत्रण — तो वे प्रति हेक्टेयर 20–25 क्विंटल तक की उच्च उपज प्राप्त कर सकते हैं। चना न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने वाली फसल है बल्कि यह किसानों को रबी सीजन में बेहतर आमदनी का अवसर भी प्रदान करती है।

# जानिए जई की तीन नई उन्नत किस्मों के बारे में, जो दिलाएंगी ज्यादा चारा और बीज उत्पादन



किसानों और पशुपालकों के लिए बड़ी खुशखबरी! चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के चारा अनुभाग ने जई (ओट्स) की तीन नई उन्नत किस्में विकसित की हैं, जो अधिक हरा चारा और बेहतर बीज उत्पादन देने में सक्षम हैं। ये किस्में देश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में उगाई जा सकती हैं, जिससे सालभर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। इन किस्मों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये कम लागत में ज्यादा उत्पादन देने वाली हैं। इससे न केवल पशुओं को गुणवत्तापूर्ण चारा मिलेगा, बल्कि दूध उत्पादन व पशु स्वास्थ्य में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिलेगा।

## ये हैं जई की तीन नई किस्में

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई तीन किस्में हैं – HFO 917, HFO 1014 और HFO 915। इनमें से दो किस्में (HFO 917 और HFO 1014) बीज और चारा दोनों के लिए उपयुक्त हैं, जबकि तीसरी किस्म (HFO 915) एक से अधिक बार कटाई के लिए उपयुक्त है। इन किस्मों को भारत सरकार ने भी मंजूरी दे दी है।

## चारा संकट से मिलेगी राहत

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि देश में वर्तमान में हरे चारे की 11.24% और सूखे चारे की 23.4% की कमी है। ऐसे में ये नई किस्में चारा संकट को दूर करने में अहम भूमिका निभा सकती हैं। इन्हें भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है ताकि समय पर इनकी खेती सुनिश्चित हो सके।

## HFO 917 और HFO 1014 – दोहरे उपयोग वाली किस्में

इन दोनों किस्मों को डॉ. योगेश जिंदल और उनकी टीम ने विकसित किया है। इनसे न केवल उच्च गुणवत्ता वाला हरा चारा, बल्कि अच्छा बीज उत्पादन

भी प्राप्त किया जा सकता है।

### HFO 917 की विशेषताएं:

- हरा चारा उत्पादन: 192 क्विंटल/हेक्टेयर
- सूखा चारा उत्पादन: 28 क्विंटल/हेक्टेयर
- बीज उत्पादन: 23.8 क्विंटल/हेक्टेयर
- प्रोटीन प्रतिशत: उत्तर-पश्चिम भारत में 14.4% और उत्तर-पूर्व भारत में 9.38%

### HFO 1014 की विशेषताएं:

- हरा चारा उत्पादन: 185 क्विंटल/हेक्टेयर
- सूखा चारा उत्पादन: 28 क्विंटल/हेक्टेयर
- बीज उत्पादन: उत्तर-पश्चिम भारत में 24.3 क्विंटल/हेक्टेयर, उत्तर-पूर्व में 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- प्रोटीन प्रतिशत (उत्तर-पश्चिम भारत): 15.5%

### किन राज्यों में करें खेती?

HFO 917 और HFO 1014 को हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड (तराई क्षेत्र), पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और असम में उगाने की सिफारिश की गई है।

### HFO 915 – बार-बार कटाई के लिए उपयुक्त किस्म

यह किस्म विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए बनाई गई है, जहाँ एक ही फसल से कई बार कटाई की आवश्यकता होती है।

### HFO 915 की विशेषताएं:

- हरा चारा उत्पादन: 234 क्विंटल/हेक्टेयर
- सूखा चारा उत्पादन: 50 क्विंटल/हेक्टेयर
- बीज उत्पादन: 15.7 क्विंटल/हेक्टेयर
- प्रोटीन प्रतिशत: लगभग 10%
- उत्पादन क्षमता: RO-19 से 4% और UPO-212 से 9% अधिक

### सालभर मिलेगा बेहतर चारा

इन तीन किस्मों की मदद से देश के विभिन्न हिस्सों में सालभर बेहतर गुणवत्ता वाला चारा उपलब्ध रहेगा। यदि किसान अपने क्षेत्र के अनुसार इन किस्मों का चयन करते हैं, तो पशुपालन की लागत घटेगी और दूध उत्पादन में भी बढ़ोतरी होगी।

जई की ये नई किस्में पशुपालकों के लिए वरदान साबित हो सकती हैं। अधिक उत्पादन, बेहतर पोषण और विभिन्न क्षेत्रों के अनुकूल ये किस्में भारतीय पशुधन को सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम हैं।

# शरदकालीन गन्ने की खेती : उच्च उपज और रोग प्रतिरोधक किस्मों से पाएं अधिक मुनाफा




### जानें – कौन-सी गन्ने की किस्में देंगी बेहतरीन पैदावार, रोगों से सुरक्षा और अधिक शर्करा प्रतिशत

भारत में गन्ने की खेती सदियों से किसानों की आय का प्रमुख स्रोत रही है। यह एक महत्वपूर्ण नकदी फसल (Cash Crop) है, जिसका उपयोग न केवल चीनी उद्योग में होता है, बल्कि गुड़, शीरा

# लगे हटके
# करे हटके

## बोल्ड एंड ब्लैक



(molasses), इथेनॉल और पशु चारे जैसी कई उप-उत्पादों के निर्माण में भी किया जाता है। देश में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्य गन्ने के प्रमुख उत्पादक हैं। यदि किसान समय पर बुआई, उचित किस्म का चयन, संतुलित उर्वरक प्रबंधन और रोग नियंत्रण तकनीक अपनाएं, तो शरदकालीन गन्ने से उन्हें प्रति हेक्टेयर हजार क्विंटल से भी अधिक उत्पादन प्राप्त हो सकता है।

## शरदकालीन गन्ने की खेती का महत्व

शरदकालीन गन्ना सामान्यतः अक्टूबर से नवंबर के बीच बोया जाता है। इस समय तापमान, नमी और मिट्टी की स्थिति गन्ने की जड़ों के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल रहती है। इस मौसम में बोया गया गन्ना मजबूत पौध तैयार करता है, जिसमें शर्करा प्रतिशत (Sugar Recovery) अधिक होता है। इसके अलावा, यह किस्में गर्मी और सूखे दोनों परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

## उपयुक्त गन्ना बीज का चयन कैसे करें

बेहतर फसल के लिए बीज चयन सबसे महत्वपूर्ण चरण है।

- बीज का उम्र: 9–10 महीने पुराना, पूर्ण परिपक्व और मोटा गन्ना चुनें।
- बीज की स्थिति: गन्ने में लाल सड़न, ऊखमुड़िया या दीमक का असर बिल्कुल नहीं होना चाहिए।
- आंख (बड): जीवित और स्वस्थ होनी चाहिए।
- बीज का स्रोत: अपने खेत या कृषि विभाग से प्रमाणित बीज ही लें, ताकि उत्पादकता और रोग-प्रतिरोधकता सुनिश्चित हो।

## शरदकालीन गन्ने की उन्नत किस्में

गन्ने की किस्में सामान्यतः जल्दी पकने वाली (Early Maturing) और मध्यम से देर पकने वाली (Mid to Late Maturing) दो श्रेणियों में आती हैं। किसानों को अपनी क्षेत्रीय जलवायु, मिट्टी और चीनी मिलों के Crushing Schedule के अनुसार किस्म का चयन करना चाहिए।

## जल्दी पकने वाली किस्में (Early Maturing Varieties)

ये किस्में 10–11 महीनों में तैयार हो जाती हैं और शुरुआती पेराई सीजन के लिए उपयोगी हैं:

- CoLk 14201 – लाल सड़न और ऊखमुड़िया रोग से प्रतिरोधी, उपज 850–950 क्विंटल/हेक्टेयर तक।
- Co 16034 – 18–19% शर्करा के साथ सूखे में भी बेहतरीन प्रदर्शन। उत्पादन लगभग 900 क्विंटल/हेक्टेयर।
- Co 17018 – पीलापन व कीट-प्रतिरोधक, उच्च रस गुणवत्ता, उपज 950 क्विंटल/हेक्टेयर।
- Co 15023 – मोटा डंठल, तेज वृद्धि, औसत उत्पादन 880 क्विंटल/हेक्टेयर।

## मध्यम से देर पकने वाली किस्में (Mid to Late Maturing Varieties)

इन किस्मों में शर्करा की मात्रा अधिक होती है और खेत में देर तक रहने पर भी यह नहीं गिरतीं।

- CoS 767 – रेड रॉट व स्मट रोग से सुरक्षा, औसत उपज 950–1000 क्विंटल/हेक्टेयर।
- CoS 8432 – सूखे में सहनशील, रस में 19% चीनी, उत्पादन लगभग 1000 क्विंटल/हेक्टेयर।
- CoS 88216 – मोटा डंठल, अधिक रस और रोग प्रतिरोधकता के साथ 1050 क्विंटल/हेक्टेयर तक उत्पादन।
- CoS 97264 – सफेद सड़न और दीमक से बचाव, उपज 950 क्विंटल/हेक्टेयर।
- CoS 96275 – उच्च चीनी प्रतिशत और रोगों से मजबूत रक्षा, उत्पादन 900–1000

क्विंटल/हेक्टेयर।

- Pant 84212 – उत्तर भारत की लोकप्रिय किस्म, ठंड सहनशीलता और 18.5% चीनी के साथ 1050 क्विंटल/हेक्टेयर तक उपज।

## गन्ने की बुआई का वैज्ञानिक तरीका

शरदकालीन गन्ने की बुआई अक्टूबर के पहले पखवाड़े में करना सर्वोत्तम माना जाता है। पंक्ति दूरी: साधारण बुआई में 75 सेमी, मिश्रित फसल (जैसे आलू, चना, सरसों) के लिए 90 सेमी।

## बीज की मात्रा:

- एक आंख वाले टुकड़े – 10 क्विंटल प्रति एकड़
- दो आंख वाले टुकड़े – 20 क्विंटल प्रति एकड़

## बीज का उपचार कैसे करें

**रासायनिक उपचार:**

205 ग्राम एरीटॉन या 500 ग्राम एगलॉल को 100 लीटर पानी में मिलाकर 25 क्विंटल बीज डुबोएं।

## जैविक उपचार:

1 लीटर एजोटोबैक्टर + 1 लीटर पी.एस.बी. को 100 लीटर पानी में मिलाकर 30 मिनट तक बीज डुबोकर सुखाएं और फिर बुआई करें। इस प्रक्रिया से रोगजनक फफूंद और कीटों का खतरा काफी हद तक कम होता है और अंकुरण दर बढ़ती है।

## खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

यदि मिट्टी परीक्षण नहीं हुआ है, तो औसतन निम्न मात्रा प्रति हेक्टेयर डालना लाभकारी रहेगा:

- नाइट्रोजन (N): 60–75 कि.ग्रा.
- फॉस्फोरस (P): 60–80 कि.ग्रा.
- पोटाश (K): 20–40 कि.ग्रा.
- जिंक सल्फेट: 25 कि.ग्रा.

इसके साथ ही खेत तैयार करते समय 10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या प्रेसमड डालना न भूलें। यह मिट्टी की संरचना सुधारती है, सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ाती है और गन्ने की जड़ों को पोषण प्रदान करती है।

## कीट एवं रोग प्रबंधन

गन्ने की फसल को दीमक, शूट बोरर, टॉप बोरर, और रेड रॉट जैसी बीमारियों से बचाना आवश्यक है।
दीमक व अंकुर बेधक के लिए: क्लोरोपाइरीफॉस (20 ईसी) – 6.25 लीटर/हेक्टेयर + क्लोरेन्ट्रेनिलिप्रोल (18.5 एससी) – 500–600 मिली/हेक्टेयर को 1500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। खेत की नियमित निगरानी करें और प्रारंभिक अवस्था में ही निराई-गुड़ाई कर खरपतवार नियंत्रण सुनिश्चित करें।

## उन्नत बीजों से अधिक उत्पादन और गुणवत्ता

यदि किसान उन्नत किस्मों का चयन, समय पर बीज उपचार, उचित सिंचाई और पोषण प्रबंधन अपनाते हैं, तो उन्हें 1000–1100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो सकती है। इन किस्मों की खासियत यह है कि इनसे रोगों का खतरा कम रहता है और रस में शर्करा प्रतिशत अधिक होता है, जिससे चीनी मिलों में Recovery Rate भी बेहतर रहती है। शरदकालीन गन्ने की खेती किसानों के लिए एक स्थायी और लाभकारी विकल्प है। सही तकनीक और रोगप्रतिरोधी किस्मों के उपयोग से किसान न केवल अपनी आय बढ़ा सकते हैं, बल्कि मिट्टी की सेहत और फसल की गुणवत्ता भी बनाए रख सकते हैं।

# सरसों की इस उन्नत किस्म से पाएं 36 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार, कम पानी में भी मिलेगा शानदार उत्पादन




भारत में सरसों की खेती रबी सीजन के दौरान बड़े पैमाने पर की जाती है। राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में यह किसानों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। बेहतर उत्पादन और सीमित सिंचाई में अच्छी फसल लेने के लिए किसान उन्नत किस्मों को प्राथमिकता देते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित आरएच 725 सरसों की किस्म किसानों के लिए एक उपयोगी विकल्प मानी जाती है। इस किस्म की खासियत इसकी संभावित अधिक उपज, मोटे दाने, मजबूत तना और अच्छी तेल मात्रा है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, आरएच 725 सरसों से सामान्य परिस्थितियों में लगभग 25 से 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर औसत पैदावार प्राप्त हो सकती है। वहीं, अनुकूल मौसम, उपयुक्त मिट्टी और वैज्ञानिक तरीके से फसल प्रबंधन करने पर इसकी उपज 36 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पहुंचने की संभावना बताई गई है। हालांकि, किसानों को ध्यान रखना चाहिए कि वास्तविक पैदावार खेत की स्थिति, बीज की गुणवत्ता, सिंचाई, पोषक तत्वों और मौसम पर निर्भर करती है।

## हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की आरएच 725 सरसों की किस्म की प्रमुख विशेषताएं

आरएच 725 सरसों को इसकी कुछ खास कृषि विशेषताओं के लिए जाना जाता है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, इस किस्म में फलियां अपेक्षाकृत लंबी और मोटी होती हैं। प्रत्येक फली में करीब 17 से 20 दाने होने की जानकारी दी गई है। इसके दाने भी मोटे और वजनदार बताए जाते हैं, जो फसल की उपज क्षमता में योगदान दे सकते हैं। इस किस्म का तना मजबूत होने की बात भी सामने आई है। मजबूत तने से फसल के गिरने की आशंका कुछ परिस्थितियों में कम हो सकती है। हालांकि, तेज हवा, अधिक नमी, पौधों की बढ़वार और खेत में पोषक तत्वों के असंतुलन जैसे कारक फसल को प्रभावित कर सकते

हैं। इसलिए अच्छी पैदावार के लिए सही किस्म के साथ उचित कृषि प्रबंधन भी जरूरी है।

## आरएच 725 सरसों में मिल सकती है 40 से 42 प्रतिशत तक तेल की मात्रा

सरसों की खेती में तेल की मात्रा एक महत्वपूर्ण गुण है, क्योंकि इसका संबंध फसल की गुणवत्ता और तेल उत्पादन से होता है। उपलब्ध मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, आरएच 725 सरसों में लगभग 40 से 42 प्रतिशत तक तेल की मात्रा बताई गई है। इस कारण यह किस्म सरसों उत्पादक किसानों के लिए आकर्षक हो सकती है।

हालांकि, सरसों की उपज का बाजार भाव केवल तेल की मात्रा से निर्धारित नहीं होता। फसल की गुणवत्ता, बाजार में मांग, स्थानीय मंडी के भाव और अन्य परिस्थितियां भी कीमत को प्रभावित करती हैं। किसान बीज का चयन करते समय अपने क्षेत्र के कृषि विशेषज्ञों से किस्म की विशेषताओं और स्थानीय प्रदर्शन के बारे में जानकारी अवश्य लें।

## कम सिंचाई में सरसों की खेती के लिए उपयोगी विकल्प

पानी की उपलब्धता खेती की लागत और उत्पादन दोनों को प्रभावित करती है। ऐसे में कम सिंचाई में अच्छी उपज देने वाली किस्में किसानों के लिए महत्वपूर्ण हो सकती हैं। रिपोर्टों के अनुसार, आरएच 725 सरसों की फसल में सामान्य परिस्थितियों में एक से दो सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है। हालांकि, सिंचाई की वास्तविक जरूरत मिट्टी की जलधारण क्षमता, बारिश, तापमान और फसल की अवस्था पर निर्भर करेगी।

कम पानी वाले क्षेत्रों में खेती करने वाले किसानों के लिए यह किस्म उपयोगी साबित हो सकती है। उत्तरी राजस्थान, दक्षिणी हरियाणा, पंजाब, दिल्ली और जम्मू के कुछ क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता बताई जाती है। फिर भी, हर क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी अलग होती है, इसलिए बुवाई से पहले स्थानीय कृषि विभाग या कृषि विज्ञान केंद्र से इसकी अनुशंसा की पुष्टि करना उचित रहेगा।

## आरएच 725 सरसों की बुवाई का सही समय क्या है?

सरसों की अच्छी पैदावार के लिए समय पर बुवाई करना जरूरी है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, आरएच 725 की बुवाई के लिए सितंबर से अक्टूबर के बीच का समय बताया गया है। हालांकि, यह अवधि सभी क्षेत्रों के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं हो सकती। सही समय का निर्धारण स्थानीय तापमान, मिट्टी में नमी और कृषि विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर करना चाहिए। बुवाई से पहले खेत को अच्छी तरह तैयार करें और प्रमाणित बीज का ही इस्तेमाल करें। पौधों की उचित संख्या बनाए रखने के लिए बीज की मात्रा और कतारों के बीच दूरी संबंधी स्थानीय कृषि सिफारिशों का पालन करें। इसके साथ ही, संतुलित खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण और फसल की नियमित निगरानी पर ध्यान देना चाहिए। जरूरत के अनुसार सिंचाई करने से फसल की बढ़वार और दाना भरने की प्रक्रिया को सहारा मिल सकता है।

## सरसों के बीज खरीदते समय किसान किन बातों का रखें ध्यान?

आरएच 725 सरसों की बुवाई करने से पहले किसानों को बीज की गुणवत्ता और प्रमाणिकता की जांच करनी चाहिए। बीज खरीदते समय पैकेट पर किस्म का सही नाम, उत्पादक का विवरण, लॉट नंबर और वैधता से संबंधित जानकारी देखें। केवल अधिक उपज के दावों के आधार पर बीज खरीदने से बचें।

इसके अलावा, यह भी पता करें कि आरएच 725 किस्म आपके जिले और कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए अनुशंसित है या नहीं। कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विभाग या संबंधित कृषि विश्वविद्यालय से जानकारी लेकर बीज का चयन करना अधिक बेहतर रहेगा। सही किस्म के साथ समय पर बुवाई, संतुलित पोषण, आवश्यक सिंचाई और कीट-रोगों की निगरानी से उत्पादन की संभावनाओं को बेहतर बनाया जा सकता है।

# WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

## Enhances operator comfort



### किसानों के लिए कितनी फायदेमंद है आरएच 725 सरसों?

आरएच 725 सरसों की किस्म अपनी संभावित अच्छी पैदावार, मोटे दानों, मजबूत तने और तेल की बताई गई मात्रा के कारण किसानों के लिए एक विकल्प हो सकती है। सामान्य परिस्थितियों में 25 से 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज और अनुकूल परिस्थितियों में 36 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन की जानकारी उपलब्ध है। हालांकि, अधिकतम उपज हर खेत में मिलना निश्चित नहीं है। किसानों को बुवाई से पहले अपने क्षेत्र के लिए किस्म की उपयुक्तता की पुष्टि करनी चाहिए और स्थानीय कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार खेती करनी चाहिए। सही बीज का चयन और वैज्ञानिक फसल प्रबंधन अपनाकर सरसों की बेहतर पैदावार प्राप्त करने की संभावना बढ़ाई जा सकती है।

# नवंबर-दिसंबर में करें इन 7 सब्जियों की खेती, पाएं ज्यादा उत्पादन और मुनाफा




### रबी सीजन में करें इन सब्जियों की खेती, कम खर्च में होगी लाखों की कमाई

नवंबर का महीना किसानों के लिए बेहद महत्वपूर्ण होता है। इस समय अधिकांश जगहों पर धान की कटाई पूरी हो जाती है और बड़ी संख्या में खेत खाली पड़े रहते हैं। अगर इन खाली खेतों को यूं ही छोड़ दिया जाए, तो न केवल समय बर्बाद होता है बल्कि संभावित अतिरिक्त आय का मौका भी चला जाता है। लेकिन अगर किसान थोड़ी समझदारी और योजना के साथ कुछ चुनी हुई सब्जियों की खेती करें, तो वे इस मौसम में भी शानदार कमाई कर सकते हैं। नवंबर में बोई गई कुछ सब्जियों की बाजार में मांग काफी अधिक रहती है, क्योंकि आपूर्ति कम और उपभोक्ता मांग ज्यादा होती है। यही कारण है कि इन फसलों का समर्थन मूल्य बढ़ जाता है और किसान अच्छा मुनाफा कमा लेते हैं।

### 1. भिंडी की खेती – कम खर्च, ऊंचा लाभ

अगर आपके क्षेत्र में सर्दी बहुत अधिक नहीं पड़ती या पाला नहीं गिरता, तो नवंबर का महीना भिंडी की बुवाई के लिए उत्कृष्ट माना जाता है। इस समय बोई गई भिंडी जनवरी–फरवरी में बाजार में आती है, जब इसकी आपूर्ति बेहद कम होती है। इस दौरान भिंडी अक्सर 80 से 100 रुपये प्रति किलो तक बिक जाती है, जिससे किसान की आमदनी काफी बढ़ जाती है। भिंडी की खेती करते समय उन्नत और रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना बहुत जरूरी है। इससे फसल स्वस्थ रहती है, उत्पादन अच्छा मिलता है और कटाई भी समय पर होती है। यदि खेत की तैयारी सही हो, खरपतवार नियंत्रण किया जाए और समय पर सिंचाई दी जाए, तो भिंडी की खेती किसान के लिए सोने की खान साबित हो सकती है।

### 2. जुकिनी की खेती – कम समय में तैयार होकर देती है जल्दी कमाई

नवंबर में जुकिनी की खेती किसानों को तेज मुनाफा दिलाने वाली फसलों में गिनी जाती है। यह पौधा ठंड की परिस्थितियों में भी तेजी से बढ़ता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह फसल मात्र 30 से 35 दिनों में फल देना शुरू कर देती है और लगभग

40 से 45 दिनों में पूरी तरह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। यानी बहुत कम समय में किसान अपनी लागत वसूल कर अच्छा लाभ कमाना शुरू कर सकते हैं। अगर आपकी खेती शहरों या बड़े बाजारों के पास है, तो पीली जुकिनी उगाना अधिक फायदेमंद रहेगा, क्योंकि होटलों, सुपरमार्केट और रेस्टोरेंट्स में इसकी मांग बेहद ज्यादा रहती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे कस्बों के नजदीक खेती करने वाले किसान हरी जुकिनी को चुन सकते हैं। दोनों ही किस्में किसानों को अच्छे दाम दिलाती हैं और यह नवंबर माह की एक स्मार्ट कैश क्रॉप मानी जाती है।

## 3. हरी मटर की खेती – सर्दियों की सबसे पसंदीदा और मुनाफे वाली फसल

हरी मटर सर्दियों की सबसे लोकप्रिय और मांग वाली सब्जियों में से एक है। नवंबर में बोई गई मटर तब तैयार होती है, जब बाजार में पुरानी फसल की आपूर्ति कम हो चुकी होती है। इस समय आपके खेत की ताज़ी, हरी और दानों से भरी मटर अच्छी गुणवत्ता के साथ मंडी में पहुंचती है और अक्सर ऊंचे दामों पर बिकती है। हरी मटर की खेती में उन्नत किस्मों का चयन, सही बीज उपचार, नियमित सिंचाई और समय पर रोग नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है। यदि किसानों द्वारा इन बिंदुओं का ध्यान रखा जाए, तो मटर की खेती से बेहद अच्छी आमदनी हासिल की जा सकती है। यह रबी सीजन की उन फसलों में से है जो छोटे से खेत में भी बड़ा मुनाफा देने की क्षमता रखती हैं।

## 4. प्याज की खेती

प्याज की खेती भारत में मुख्य रूप से रबी के सीजन में की जाती है, यानि की नवंबर महीने में इसकी बुवाई की जाती है। प्याज नवम्बर-दिसम्बर में बोई जाती है, फरवरी-मार्च में कटाई जाती है। इस महीने में प्याज की नर्सरी तैयार कर उसकी रोपाई खेत में करनी चाहिए। पौधों को 20-25 सेमी की दूरी पर और कतारों को 30-35 सेमी की दूरी पर रोपें। प्याज की खेती से किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

## 5. गाजर की खेती देगी अच्छी कमाई

गाजर की खेती भी नवंबर में किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय साबित हो सकती है। यह कम समय में अच्छी पैदावार देने वाली फसल है और उचित प्रबंधन से इससे अच्छी कमाई की जा सकती है। खेत की 2-3 बार अच्छी जुताई करें और सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाकर पाटा चलाएं।15 से 20 सेंटीमीटर ऊंचाई वाले बेड बनाएं और बीज 15 सेमी की दूरी पर बुवाई करें। प्रति हेक्टेयर लगभग 4 से 6 किलो बीज की जरूरत होती है। गाजर लगभग 90 से 100 दिनों में तैयार हो जाती है।

## 6. लहसुन की खेती

लहसुन की खेती किसानों के लिए अत्यंत लाभप्रद साबित हो रही है और सही तकनीक अपनाने पर इससे अच्छी आर्थिक लाभ की संभावना होती है। नवंबर के महीने में आप भी इसकी बुवाई करके अच्छा मुनाफा कमा सकते है। लहसुन ठंडे और शुष्क मौसम में बेहतर बढ़ता है, इसलिए उत्तर भारत में रबी सीजन इसकी खेती के लिए बेहतर रहता है। लहसुन की खेती में कलियां बीज के रूप में प्रयोग होती हैं। प्रति एकड़ लगभग 8 क्विंटल बीज की जरूरत होती है।किसान भाई नवंबर में इसकी खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

## 7. पालक की खेती

पालक की खेती नवंबर के महीने में एक लाभकारी और जल्दी फसल तैयार होने वाली कृषि गतिविधि है, जो अधिकतर ठंडे मौसम में सफल होती है। पालक के लिए मौसम 15°C से 25°C के बीच सबसे उपयुक्त होता है। यह ठंडे और समशीतोष्ण जलवायु में अच्छी तरह उगता है। गर्मी में इसकी वृद्धि धीमी होती है और पत्ते कठोर हो सकते हैं जिससे गुणवत्ता प्रभावित होती है।

## खाली खेतों को बनाए कमाई का जरिया

किसान भाइयों, नवंबर का महीना अवसरों से भरा

हुआ होता है। इस समय खाली पड़े खेतों का उपयोग करके आप भिंडी, जुकिनी, प्याज, लहसुन, गाजर और हरी मटर जैसी फसलों की बुवाई कर सकते हैं, जो कम समय में तैयार होती हैं और बाजार में हमेशा मांग में रहती हैं। इन सब्जियों की खेती में लागत कम और लाभ अधिक मिलता है। थोड़ी योजना, सही बीज का चयन और सतर्क प्रबंधन से आप इस सीजन में अपनी आय कई गुना तक बढ़ा सकते हैं। सही फैसले के साथ यह मौसम आपके लिए लाखों का मुनाफा ला सकता है।

# जरबेरा फूल की खेती - जलवायु, मिट्टी, फसल उत्पादन से जुडी सम्पूर्ण जानकारी



जरबेरा बहुवर्षीय कर्तित पुष्प वर्ग का पौधा है। जरबेरा एक खूबसूरत और आकर्षक फूल है, इसकी उत्पत्ति स्थल अफ्रीका को माना जाता है। इसकी खेती अलंकृत बागवानी में सजावट एवं गुलदस्ता बनाने के लिए की जाती है। छोटी किस्म की प्रजातियों को गमलों में शोभाकारी किनारी के रूप में भी उगाया जाता है। इसके कर्तित पुष्प लगभग एक सप्ताह तक तरोताज़ा बने रहते हैं। इसकी लगभग 70 प्रजातियाँ हैं जिसमें 7 का उत्पत्ति स्थल भारत या आस पास का माना गया है। इस लेख में हम आपको जरबेरा फूल की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी देंगे।

## जरबेरा की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

### जलवायु

जरबेरा की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु सबसे अच्छी है। इसे 18-24°C का तापमान चाहिए। जरबेरा को ठंड और उच्च तापमान दोनों हानिकारक हैं। सूर्य से प्रत्यक्ष प्रकाश की जरूरत है, लेकिन अत्यधिक गर्मी से बचाने के लिए हल्की छाया भी प्राप्त की जा सकती है। जरबेरा की खेती हवादार जगहों पर की जानी चाहिए ताकि पौधों को उचित वायु संचालन मिल सके।

### जरबेरा के लिए मिट्टी

जरबेरा में बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। मिट्टी का pH 5.5 से 6.5 तक होना चाहिए। इसके लिए जमीन को अच्छी तरह से जोता जाता है और जैविक खाद, जैसे वर्मी कम्पोस्ट या गोबर की खाद, उसमें मिलाया जाता है। मिट्टी की अच्छी नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई और जल निकासी का उचित नियंत्रण भी आवश्यक है। खेत की अंतिम जुताई करने के बाद पाटा लगाकर जमीन को समतल करना चाहिए।

### जरबेरा प्रवर्धन की विधि

जरबेरा दोनों बीज और वानस्पतिक भागों से उगाया जाता है। बीज नवजातियों को जन्म देता है। वानस्पतिक प्रवर्धन से पौधे पुराने पौधों की तरह उत्पादित होते हैं। कलम्प विभाजन इस प्रक्रिया से जरबेरा को बढ़ावा देता है। कलम्प विभाजन प्रक्रिया से बड़े पैमाने पर पौधों को कम समय में नहीं बनाया जा सकता है। रोगमुक्त पौधा उत्तक संवर्धन विधि से बनाया जाता है।

## जरबेरा की रोपाई के लिए भूमि की तैयारी और रोपाई

बालू क्यारी बनाने से पहले, जीवांश पदार्थ (पत्तियों की सड़ी खाद या गोबर की खाद) को अधिक मात्रा में मिलाकर मिलाया जाता है। क्यारी बनाने से पहले मिट्टी की 30 से 40 सेंमी. गहरी खुदाई करके भुरभुरा और खरपतवार को बाहर निकाल दें।पौध रोपण से 15 से 20 दिन पहले, मृदा परीक्षण के परिणामों के आधार पर आवश्यक रासायनिक उर्वरक और जीवांश मिट्टी में 15 से 20 सेंमी. गहराई तक अच्छी तरह मिला देते हैं।

मिट्टी को सक्रांमक रूप से शुद्ध करने के लिए फार्मेल्डिहाइड की 2.0 प्रतिशत सान्द्रता का घोल बनाकर ड्रेसिंग करके दो से तीन दिनों के लिए पॉलीथीन से मिट्टी को ढक दें। पॉलीथीन को मिट्टी की सतह से निकालने के बाद छह से सात दिनों तक मिट्टी को खुला छोड़ दें। वातावरण अनुकूल होने पर जरबेरा का पौध पूरे वर्ष रोपण किया जा सकता है। यह जून से सितंबर और फरवरी से मार्च तक लगाया जाता है। पंक्ति और पौध का फासला 33 या 40 सेंमी होना चाहिए।

जरबेरा पौधों को लगातार पोषक तत्व देना चाहिए, लेकिन उसे कभी भी बहुत सारे पोषक तत्व नहीं देना चाहिए। पौध रोपण चार

### जरबेरा की खेती में उर्वरक प्रबंधन

तब तक उर्वरक देना नहीं शुरू करते जब तक पौधों में नई वृद्धि नहीं हो जाती। नत्रजन, फास्फोरस और पोटाश के लिए घुलनशील ग्रेडेड विभिन्न प्रतिशत वाले रासायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है, जैसे 13:13:13, 19:19:19 और 0:0:51, नाइट्रोजन में कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट भी शामिल है। ज़रुरत पड़ने पर पौधों पर सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव किया जाता है। वर्तमान में पौधों की वृद्धि एवं विकास पर इन सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा काफी प्रभावी है। तक निर्भर है।

### जरबेरा की खेती में फूल की तुड़ाई

गुणवत्तापूर्ण पुष्प उत्पादन पौध रोपण के पांच से छह महीने बाद होता है। जर्बेरा फूल जब पूरी तरह से खिलते ही उन पुष्पों को उसी दिन काट देना चाहिए।

फूलों को सही समय से पहले काटने से उनका रंग और आकार खराब हो जाएगा। कटाई सुबह के समय की जानी चाहिए ताकि फूल ताजगी बनाए रखें। कटाई के बाद फूलों को साफ पानी में रखा जाता है ताकि वे अधिक समय तक ताजगी बनाए रखें।

एक एकड़ क्षेत्र से 1-1.5 लाख फूल प्रति वर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं, जो किसानों के लिए अच्छा लाभ प्रदान करते हैं।

# जिरेनियम की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी



जिरेनियम एक सुगंधित पौधा है, जिससे निकलने वाला तेल इत्र, साबुन और कॉस्मेटिक उद्योगों में अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। इसकी खुशबू गुलाब जैसी होती है, और यह अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी काफी लोकप्रिय है।

भारत में जिरेनियम तेल की कीमत लगभग ₹20,000 प्रति लीटर तक है, लेकिन घरेलू उत्पादन बेहद कम है—सिर्फ 2 टन। वहीं, देश को 20 टन तेल आयात करना पड़ता है। ऐसे में जिरेनियम की खेती किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय बन सकती है।

### कम निवेश, ज़्यादा मुनाफा

जिरेनियम की खेती में लागत कम होती है, क्योंकि इसे बहुत ज़्यादा सिंचाई या रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं होती। यह सूखा सहन कर सकने वाली फसल है, जिससे छोटे और सीमांत किसान भी इससे अच्छा लाभ कमा सकते हैं। यदि आधुनिक खेती तकनीकों और समय पर प्रबंधन का पालन किया जाए, तो यह फसल ₹3 लाख तक का शुद्ध मुनाफा दे सकती है।

### नर्सरी और रोपण का समय

सीमैप (लखनऊ) के अनुसार, अक्टूबर में नर्सरी तैयार की जाती है और पौधों की रोपाई नवंबर से फरवरी तक की जाती है। एक एकड़ ज़मीन पर लगभग 20,000–22,000 पौधे लगाए जाते हैं, जिनके बीच की दूरी 30 से 45 सेंटीमीटर होती है।

### खेती की विधि और देखभाल

खेत की अच्छी तरह जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बनाया जाता है। पानी की निकासी का समुचित प्रबंध बेहद आवश्यक है। रोपाई के बाद कटिंग्स को नियमित देखभाल की जरूरत होती है।

### खाद और सिंचाई प्रबंधन

प्रति हेक्टेयर लगभग 300 क्विंटल गोबर की खाद का उपयोग लाभदायक होता है। इसके साथ नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का संतुलित अनुपात में प्रयोग आवश्यक है। विशेष ध्यान देना चाहिए कि जिरेनियम को अत्यधिक पानी की जरूरत नहीं होती—अधिक सिंचाई से जड़ें सड़ सकती हैं।

### फसल कटाई और तेल उत्पादन

फसल की कटाई 3–4 महीनों में तब की जाती है जब पत्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जाएं। पत्तियों का रंग न ज्यादा पीला होना चाहिए और न ही अधिक नमी से भरा हुआ। एक एकड़ से लगभग 50–60 लीटर तेल निकाला जा सकता है, जिससे लाखों की कमाई संभव है। जिरेनियम की अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग है। अगर भारत में इसके उत्पादन को बढ़ाया जाए, तो यह न केवल किसानों की आमदनी में वृद्धि कर सकता है बल्कि आयात पर भी निर्भरता घटा सकता है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां सिंचाई की सुविधा सीमित है, जिरेनियम की खेती आदर्श विकल्प बन सकती है।

# मूली की नई और उन्नत किस्मों की सूची



लेखक: डॉ वीरेन्द्र सिंह गहलान

### 1. पूसा मृदुला:

- विवरण: IARI द्वारा विकसित। सफेद, मुलायम जड़ें (25-30 सेमी), कम तीखी। गर्मी और आर्द्रता सहनशील। 35-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से सितंबर।

### 2. पूसा गुलाबी:

- विवरण: IARI की नई किस्म। गुलाबी जड़ें (20-25 सेमी), हल्की मीठी। सलाद के लिए लोकप्रिय। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से फरवरी।

### 3. अर्का निशांत:

- विवरण: IIHR की किस्म। लंबी, सफेद जड़ें (30-35 सेमी), फफूंदी-प्रतिरोधी। गर्मी और सर्दी दोनों के लिए। 40-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से जनवरी।

### 4. सिंजेंटा आइवरी व्हाइट:

- विवरण: हाइब्रिड। चिकनी, सफेद जड़ें (25-30 सेमी), कुरकुरी। ठंड में बेहतर। 40-50 दिन में तैयार। पैदावार: 35-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से नवंबर।

### 5. एफ-1 उजला (IFFCO):

- विवरण: हाइब्रिड। सफेद, एकसमान जड़ें (25-30 सेमी), हल्का तीखापन। सर्दियों में उच्च पैदावार। 45-55 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से नवंबर।

### 6. रेड प्रिंस:

- विवरण: लाल मूली, हाइब्रिड। गोल जड़ें (4-5 सेमी), रसीली, हल्का तीखा स्वाद। सलाद के लिए। 25-35 दिन में तैयार। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से मार्च।

### 7. रेड डायमंड:

- विवरण: लाल मूली। चमकदार, गोल जड़ें (3-4 सेमी), मीठी और कुरकुरी। निर्यात के लिए। 25-30 दिन में परिपक्व। पैदावार: 12-18 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से फरवरी।

### 8. सोसाइटी लॉन्ग:

- विवरण: जापानी सफेद हाइब्रिड। लंबी जड़ें (35-45 सेमी), कुरकुरी। गर्मी और सर्दी में उपयुक्त। 45-55 दिन में तैयार। पैदावार: 35-45 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से दिसंबर।

### 9. पूसा हाइब्रिड-1:

- विवरण: IARI की हाइब्रिड। सफेद, बेलनाकार जड़ें (25-30 सेमी), गर्मी-सहनशील। 40-45 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से अगस्त।

### 10. अर्का श्वेता:

- विवरण: IIHR द्वारा। चमकदार सफेद जड़ें (25-30 सेमी), कम तीखी। ठंड और गर्मी में अनुकूल। 35-40 दिन में तैयार। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: सितंबर से जनवरी।

### 11. कावेरी व्हाइट:

- विवरण: निजी हाइब्रिड। लंबी, सफेद जड़ें (30-35 सेमी), एकसमान। सर्दियों में बेहतर। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से जनवरी।

### 12. स्नो व्हाइट:

- विवरण: हाइब्रिड। छोटी, सफेद जड़ें (15-20 सेमी), सलाद के लिए। ठंडी जलवायु में उपयुक्त। 30-35 दिन में तैयार। पैदावार: 20-25 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: नवंबर से फरवरी।

### 13. रूबी स्टार:

- विवरण: लाल मूली। गोल, चमकदार जड़ें (4-5 सेमी), मसालेदार स्वाद। सलाद और गार्निश के लिए। 25-30 दिन में परिपक्व। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।

- बुवाई का समय: अक्टूबर से मार्च।

**14. पूसा रेशमी-2:**

- विवरण: IARI की उन्नत। सफेद, रेशमी जड़ें (20-25 सेमी), गर्मी-सहनशील, हल्की मिठास। 35-40 दिन में तैयार। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से सितंबर।

**15. एफ-1 डायमंड:**

- विवरण: निजी हाइब्रिड। सफेद, बेलनाकार जड़ें (25-30 सेमी), ठंड और मानसून में अच्छी। 40-45 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से दिसंबर।

**16. रेड मून:**

- विवरण: नई लाल मूली। गोल, गहरे लाल जड़ें (4-6 सेमी), कुरकुरी और रसीली। सलाद के लिए। 25-35 दिन में तैयार। पैदावार: 15-20 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से मार्च।

**17. सुपर चंद्रमा:**

- विवरण: हाइब्रिड, सफेद जड़ें (20-25 सेमी), मुलायम और कम तीखी। गर्मी में अनुकूल। 35-40 दिन में परिपक्व। पैदावार: 25-30 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: मार्च से अगस्त।

**18. ग्लोबल रेड:**

- विवरण: लाल मूली, गोल जड़ें (5-6 सेमी), मीठी और हल्की तीखी। निर्यात मांग। 25-30 दिन में तैयार। पैदावार: 12-18 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से फरवरी।

**19. हाइब्रिड सिल्वर:**

- विवरण: निजी हाइब्रिड। चमकदार सफेद जड़ें (25-30 सेमी), ठंड में बेहतर। रोग-प्रतिरोधी। 40-50 दिन में परिपक्व। पैदावार: 30-35 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अक्टूबर से जनवरी।

**20. रश्मि व्हाइट:**

- विवरण: नई हाइब्रिड। सफेद, लंबी जड़ें (30-35 सेमी), कुरकुरी। सर्दी और मानसून में उपयुक्त। 40-45 दिन में तैयार। पैदावार: 30-40 टन/हेक्टेयर।
- बुवाई का समय: अगस्त से जनवरी।
- बुवाई का समय पश्चिमी उत्तर प्रदेश की जलवायु (गर्मी: 30-40°C, सर्दी: 5-15°C, मानसून: उच्च आर्द्रता) को ध्यान में रखकर दिया गया है।
- कुछ किस्में (जैसे पूसा मृदुला, पूसा रेशमी-2) गर्मी-सहनशील हैं, जबकि अन्य (जैसे स्नो व्हाइट, कावेरी व्हाइट) ठंडी जलवायु के लिए उपयुक्त हैं।
- लाल मूली किस्में (रेड प्रिंस, रेड डायमंड, रूबी स्टार) सलाद और निर्यात के लिए लोकप्रिय हैं और ठंडी जलवायु में बेहतर हैं।

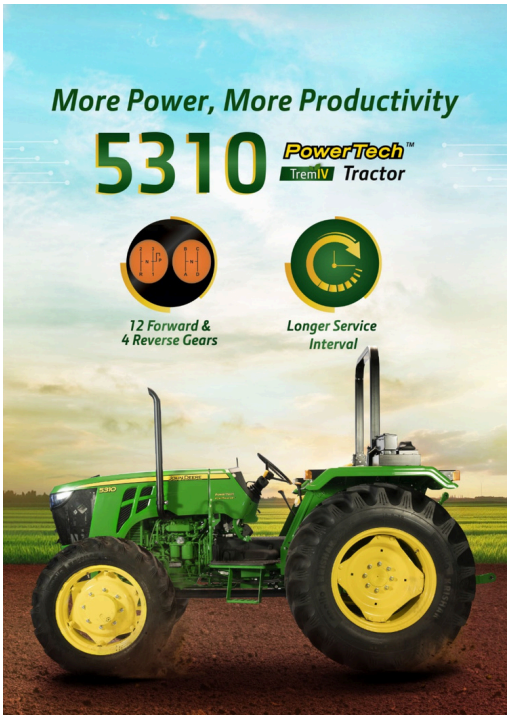

# असली ताक़त
# बेजोड़ काम
# ज़बरदस्त कमाई

**EICHER 485**

45 HP रेंज



# महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP: 50 एचपी श्रेणी में सबसे दमदार ट्रैक्टर




महिंद्रा ट्रैक्टर्स भारत में कृषि मशीनरी के प्रमुख ब्रांडों में से एक है। कंपनी किसानों की अलग-अलग कृषि जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न हॉर्सपावर श्रेणियों में ट्रैक्टर उपलब्ध कराती है। महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP एक 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे खेती के सामान्य कार्यों, जुताई, बुवाई, ढुलाई और विभिन्न कृषि उपकरणों के संचालन के लिए उपयोगी विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। इस ट्रैक्टर में 4 सिलेंडर वाला 3054 CC इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM पर काम करता है और 197 NM का अधिकतम टॉर्क जनरेट करता है। इसकी 45 HP PTO पावर और 1640 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता इसे कई तरह के कृषि उपकरणों के संचालन में उपयोगी बनाती है। आइए, महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर के इंजन, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स, कीमत और वारंटी के बारे में विस्तार से जानते हैं।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर का इंजन

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर में 4 सिलेंडर वाला 3054 CC क्षमता का इंजन दिया गया है। यह इंजन 50 HP की पावर श्रेणी में आता है और 2100 RPM पर रेटेड गति से काम करता है। इसमें 197 NM का अधिकतम टॉर्क मिलता है, जो खेतों में भारी कृषि कार्यों के दौरान उपयोगी है। इस ट्रैक्टर में वाटर-कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जो इंजन के तापमान को नियंत्रित रखने में मदद करता है। इसके अलावा, इसमें 3-स्टेज ऑयल बाथ एयर फिल्टर के साथ प्री-क्लीनर दिया गया है, जो धूल-मिट्टी वाले कृषि वातावरण में इंजन तक पहुंचने वाली हवा को साफ करने में मदद करता है। ट्रैक्टर की PTO पावर 45 HP है, जिससे किसान उपयुक्त कृषि उपकरणों का संचालन कर सकते हैं।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP के ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

इस ट्रैक्टर में पार्टियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर मिलते

हैं, जो खेतों में अलग-अलग काम और परिस्थितियों के अनुसार गति चुनने में सहायता करते हैं। इसमें 280 MM का हेवी-ड्यूटी डायाफ्राम टाइप क्लच दिया गया है, जबकि डुअल क्लच का विकल्प भी उपलब्ध है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 2.9 से 30.9 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 4.05 से 11.9 किलोमीटर प्रति घंटा है। इस गियरबॉक्स की मदद से किसान जुताई, बुवाई और ढुलाई जैसे कामों के लिए उपयुक्त गियर का चयन कर सकते हैं।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP के ब्रेक और स्टीयरिंग

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर में ड्राई डिस्क ब्रेक दिए गए हैं। इसके अलावा, ऑयल-इमर्स्ड ब्रेक का विकल्प भी उपलब्ध है। ब्रेकिंग सिस्टम ट्रैक्टर को नियंत्रित करने और खेतों में काम करते समय सुरक्षित संचालन में मदद करता है। स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें मैकेनिकल स्टीयरिंग दिया गया है, जबकि हाइड्रोस्टेटिक स्टीयरिंग का विकल्प भी मिलता है। इसमें री-सर्कुलेटिंग बॉल एंड नट टाइप स्टीयरिंग एडजस्टमेंट सिस्टम दिया गया है। स्टीयरिंग का चुनाव करते समय किसान अपने काम, आराम और उपलब्ध वेरिएंट के अनुसार निर्णय ले सकते हैं।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP का PTO

इस ट्रैक्टर में 6-स्प्लाइन PTO दिया गया है, जिसकी PTO गति 540 RPM है। इसकी 45 HP PTO पावर उपयुक्त कृषि उपकरणों को चलाने में मदद करती है। किसान इस ट्रैक्टर का उपयोग अनुकूलता के अनुसार रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य PTO-संचालित उपकरणों के साथ कर सकते हैं। हालांकि, किसी भी उपकरण को खरीदने से पहले उसकी पावर आवश्यकता और ट्रैक्टर के PTO स्पेसिफिकेशन्स का मिलान करना जरूरी है।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर में 1640 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें CAT II श्रेणी का इनबिल्ट एक्सटर्नल चेक चेन सिस्टम भी मिलता है। इसकी हाइड्रोलिक क्षमता किसानों को उपयुक्त कृषि उपकरणों को उठाने और खेतों में विभिन्न कार्य करने में सहायता देती है। किसान अपनी खेती की जरूरतों के अनुसार कल्टीवेटर, रोटावेटर और अन्य अनुकूल उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। उपकरण का वास्तविक प्रदर्शन उसके वजन, मिट्टी की स्थिति और काम की गहराई पर भी निर्भर करता है।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP का फ्यूल टैंक

इस ट्रैक्टर में 49 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। पर्याप्त ईंधन क्षमता खेतों में काम करते समय बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत को कम करने में मदद कर सकती है। हालांकि, वास्तविक डीजल खपत खेत की मिट्टी, ट्रैक्टर पर लोड, इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण और काम करने के तरीकों पर निर्भर करती है।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP के डायमेंशन और टायर

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर का वजन 2100 किलोग्राम है। इसका व्हीलबेस 1970 MM, कुल लंबाई 3520 MM और ग्राउंड क्लीयरेंस 365 MM है। ये माप ट्रैक्टर की स्थिरता, खेतों में आवाजाही और विभिन्न कृषि कार्यों के दौरान उपयोगिता को प्रभावित करते हैं।

इसमें आगे के टायर 6.00 x 16 और पीछे के टायर 14.9 x 28 साइज के दिए गए हैं। टायरों का सही रखरखाव और उचित हवा का दबाव ट्रैक्टर की पकड़, संचालन और टायरों की उम्र के लिए महत्वपूर्ण है।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP की

## कीमत?

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP ट्रैक्टर की दी गई कीमत ₹7.44 लाख से ₹7.74 लाख तक है। यह कीमत एक्स-शोरूम या अन्य मूल्य निर्धारण आधार के अनुसार अलग हो सकती है। वास्तविक ऑन-रोड कीमत राज्य, स्थानीय टैक्स, बीमा, डीलरशिप और अन्य शुल्कों के आधार पर बदल सकती है।

ट्रैक्टर खरीदने से पहले किसान अपने नजदीकी अधिकृत महिंद्रा डीलर से नवीनतम कीमत, उपलब्ध वेरिएंट और अतिरिक्त फीचर्स की जानकारी जरूर प्राप्त करें।

## महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP की वारंटी

इस ट्रैक्टर के लिए दी गई वारंटी 2000 घंटे या 2 वर्ष है। वारंटी की सटीक शर्तें, लागू होने की अवधि और कवर किए जाने वाले पार्ट्स कंपनी की नीति पर निर्भर करते हैं। खरीदारी के समय डीलर से वारंटी की शर्तों की पुष्टि करना उचित रहेगा।

## निष्कर्ष

महिंद्रा 585 डीआई पावर प्लस BP 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसमें 4 सिलेंडर वाला 3054 CC इंजन, 45 HP PTO पावर और 1640 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता मिलती है। इसके 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर, 49 लीटर का फ्यूल टैंक और स्टीयरिंग व ब्रेक के उपलब्ध विकल्प इसे विभिन्न कृषि जरूरतों के लिए विचार करने योग्य बनाते हैं।

यदि किसान जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि उपकरणों के संचालन के लिए ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, तो वे अपनी जमीन के आकार, खेती के प्रकार, उपकरणों की जरूरत और बजट के आधार पर इस मॉडल का मूल्यांकन कर सकते हैं। खरीदने से पहले डीलर से कीमत और सभी स्पेसिफिकेशन्स की पुष्टि जरूर करें।

# एचएवी 50 S1 प्लस: 48 एचपी श्रेणी में बेहतरीन इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर




भारत में आधुनिक खेती के लिए इलेक्ट्रिक और वैकल्पिक ऊर्जा तकनीक वाले ट्रैक्टरों की ओर किसानों की रुचि बढ़ रही है। ऐसे में एचएवी 50 S1 प्लस ट्रैक्टर अपनी 48 एचपी पावर श्रेणी, 4WD ड्राइव और 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता के कारण चर्चा में है। यह ट्रैक्टर खेती के विभिन्न कार्यों को ध्यान में रखकर पेश किया गया है। इसकी कीमत और तकनीकी विशेषताओं को देखते हुए किसान इसे अपनी कृषि जरूरतों के अनुसार एक विकल्प के रूप में देख सकते हैं।

## एचएवी 50 S1 प्लस ट्रैक्टर: कीमत, स्पेसिफिकेशन, फीचर

एचएवी 50 S1 प्लस इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर है, जिसे कम परिचालन खर्च और पर्यावरण के अनुकूल खेती के उद्देश्य से तैयार किया गया है। हालांकि, इसकी बैटरी क्षमता, चार्जिंग समय, एक बार चार्ज करने पर चलने की दूरी और मोटर की विस्तृत जानकारी उपलब्ध

नहीं है। इसलिए खरीदने से पहले इन महत्वपूर्ण विशेषताओं की अधिकृत डीलर से पुष्टि करना उचित रहेगा।

## एचएवी 50 S1 प्लस की इंजन क्षमता और परफॉर्मेंस

एचएवी 50 S1 प्लस 48 एचपी की पावर श्रेणी में आता है। उपलब्ध विवरण में इसे इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर बताया गया है, इसलिए इसकी पावर और प्रदर्शन को पारंपरिक डीजल इंजन वाले ट्रैक्टरों से अलग तरीके से समझना जरूरी है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में आमतौर पर बैटरी से मिलने वाली ऊर्जा इलेक्ट्रिक मोटर को चलाती है, जिससे ट्रैक्टर के पहियों और अन्य प्रणालियों को शक्ति मिलती है। इस प्रकार की तकनीक का प्रमुख उद्देश्य परिचालन खर्च कम करने और स्थानीय स्तर पर धुएं के उत्सर्जन को घटाने में मदद करना है। हालांकि, वास्तविक बचत बिजली की कीमत, चार्जिंग व्यवस्था, बैटरी की क्षमता और ट्रैक्टर के इस्तेमाल पर निर्भर करती है। एचएवी 50 S1 प्लस की मोटर, बैटरी और चार्जिंग से जुड़े विस्तृत आंकड़े उपलब्ध नहीं होने के कारण इसकी वास्तविक रनिंग कॉस्ट का सटीक अनुमान लगाना संभव नहीं है।

## एचएवी 50 S1 प्लस के प्रमुख फीचर्स

एचएवी 50 S1 प्लस में 4WD यानी फोर-व्हील ड्राइव की सुविधा बताई गई है। इस सिस्टम में चारों पहियों तक ड्राइव पहुंचती है, जिससे खेत की परिस्थितियों के अनुसार ट्रैक्टर को बेहतर पकड़ मिल सकती है। खासकर ऐसी जमीन पर जहां मिट्टी नरम हो या ट्रैक्टर को अधिक ट्रैक्शन की जरूरत हो, वहां 4WD उपयोगी हो सकता है। इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 2000 किलोग्राम बताई गई है। इससे उपयुक्त कृषि उपकरणों को उठाने और खेत में इस्तेमाल करने में सहायता मिल सकती है। हालांकि, किसी भी उपकरण का चुनाव उसके वजन, हाइड्रोलिक सिस्टम की अनुकूलता और ट्रैक्टर निर्माता की निर्धारित सीमाओं के अनुसार करना चाहिए।

इसमें ड्राई टाइप एयर फिल्टर का भी उल्लेख है। यह फीचर सामान्यतः इंजन में प्रवेश करने वाली हवा से धूल और मिट्टी के कणों को छानने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। चूंकि उपलब्ध विवरण में इस मॉडल को इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर बताया गया है, इसलिए एयर फिल्टर की वास्तविक भूमिका और इससे संबंधित तकनीकी जानकारी खरीदने से पहले कंपनी से सत्यापित करनी चाहिए।

## एचएवी 50 S1 प्लस का ट्रांसमिशन और ड्राइव सिस्टम

एचएवी 50 S1 प्लस के गियरबॉक्स और ट्रांसमिशन की विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसके गियरों की संख्या, आगे और पीछे की गति तथा ट्रांसमिशन के प्रकार के बारे में निश्चित जानकारी देना संभव नहीं है। ट्रैक्टर खरीदते समय ट्रांसमिशन की जानकारी महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि खेत की जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों के लिए अलग-अलग गति की जरूरत हो सकती है। किसानों को यह भी पता करना चाहिए कि ट्रैक्टर में गति नियंत्रण की व्यवस्था कैसी है और वह उनके नियमित कृषि उपकरणों के साथ कितनी अनुकूल है।

## एचएवी 50 S1 प्लस की लिफ्टिंग क्षमता और हाइड्रोलिक्स

एचएवी 50 S1 प्लस में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। हाइड्रोलिक सिस्टम ट्रैक्टर के पीछे लगाए जाने वाले कृषि उपकरणों को उठाने और उनकी स्थिति नियंत्रित करने में मदद करता है। इस क्षमता के कारण किसान उपयुक्त वजन वाले उपकरणों के साथ इसका इस्तेमाल करने पर विचार कर सकते हैं।

फिर भी, लिफ्टिंग क्षमता के आधार पर ही किसी ट्रैक्टर की सभी भारी उपकरणों के साथ अनुकूलता तय नहीं की जा सकती। उपकरण का प्रकार, उसका भार, हाइड्रोलिक सिस्टम की क्षमता और निर्माता की सिफारिशें भी महत्वपूर्ण हैं।

## एचएवी 50 S1 प्लस का स्टीयरिंग और ब्रेकिंग सिस्टम

उपलब्ध जानकारी में एचएवी 50 S1 प्लस के स्टीयरिंग और ब्रेकिंग सिस्टम के प्रकार का स्पष्ट विवरण नहीं दिया गया है। इसलिए यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि इसमें कौन-सा स्टीयरिंग सिस्टम और किस प्रकार के ब्रेक दिए गए हैं। ट्रैक्टर खरीदने से पहले किसानों को स्टीयरिंग चलाने में लगने वाले प्रयास, ब्रेक की कार्यक्षमता और सुरक्षा सुविधाओं की जांच करनी चाहिए। खेत और सड़क पर ट्रैक्टर के इस्तेमाल के दौरान सुरक्षित नियंत्रण महत्वपूर्ण होता है।

## एचएवी 50 S1 प्लस की कीमत

एचएवी 50 S1 प्लस की उपलब्ध कीमत ₹11,27,060 है। यह कीमत दिए गए विवरण के अनुसार है। वास्तविक एक्स-शोरूम या ऑन-रोड कीमत स्थान, डीलर और लागू शुल्कों के आधार पर अलग हो सकती है।

ट्रैक्टर खरीदने से पहले अधिकृत डीलर से वर्तमान कीमत, बैटरी पैक, चार्जिंग की जरूरत, वारंटी, सर्विसिंग और उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी लेनी चाहिए। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर के मामले में बैटरी की वारंटी और उसे बदलने की संभावित लागत भी निर्णय लेने में महत्वपूर्ण होती है।

जो किसान इस मॉडल को खरीदने पर विचार कर रहे हैं, उन्हें अपनी खेती की जरूरतों, खेत की परिस्थितियों, नियमित रूप से इस्तेमाल होने वाले उपकरणों और चार्जिंग की उपलब्धता के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। अधिकृत डीलर से पूरी तकनीकी जानकारी प्राप्त करने के बाद ही इसकी तुलना अन्य ट्रैक्टरों से करना बेहतर रहेगा।

# जॉन डियर 5405 गियर प्रो: 63 एचपी श्रेणी में दमदार ट्रैक्टर




## जॉन डियर 5405 गियर प्रो ट्रैक्टर: कीमत और स्पेसिफिकेशन

भारत में जॉन डियर ट्रैक्टर अपनी दमदार इंजन क्षमता, आधुनिक तकनीक और खेती के विभिन्न कार्यों में बेहतर प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं। कंपनी के ट्रैक्टरों को किसानों की अलग-अलग कृषि जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। जॉन डियर 5405 गियरप्रो ट्रैक्टर 63 एचपी श्रेणी में आने वाला एक शक्तिशाली मॉडल है, जो जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों के लिए उपयोगी हो सकता है। इसमें 3 सिलेंडर का 2900 सीसी इंजन, 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स, पावर स्टीयरिंग और ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इस ट्रैक्टर में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता, 68 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक और 55 एचपी की पीटीओ पावर मिलती है। ये खूबियां इसे उन किसानों के लिए उपयोगी विकल्प बनाती हैं, जिन्हें खेती के भारी उपकरणों के साथ काम करने और खेत से लेकर परिवहन तक विभिन्न कार्यों के लिए ट्रैक्टर की जरूरत होती है।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो ट्रैक्टर की इंजन क्षमता

जॉन डियर 5405 गियरप्रो में 3 सिलेंडर वाला 2900 सीसी इंजन दिया गया है, जो 63 एचपी की पावर श्रेणी में आता है। इसका इंजन 2100 आरपीएम पर काम करता है। यह पावर खेती के कई महत्वपूर्ण कार्यों, जैसे मिट्टी की जुताई, रोटावेटर चलाने, कल्टीवेटर से खेत तैयार करने और ट्रॉली के जरिए कृषि उपज का परिवहन करने में सहायक हो सकती है। इसमें ड्राई टाइप ड्यूल एलिमेंट एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन में प्रवेश करने वाली हवा से धूल और मिट्टी के कणों को छानने में मदद करता है। खेती के दौरान धूल अधिक होने के कारण एयर फिल्टर की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अलावा, ट्रैक्टर में कूलेंट कूल्ड सिस्टम के साथ ओवरफ्लो रिजर्वायर दिया गया है, जो इंजन के तापमान को नियंत्रित रखने में मदद करता है। ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 55 एचपी है। इस क्षमता के कारण किसान उपयुक्त क्षमता वाले रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य पीटीओ चालित कृषि उपकरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं। हालांकि, उपकरण का चयन करते समय उसकी पावर आवश्यकता और ट्रैक्टर की निर्धारित क्षमता का ध्यान रखना चाहिए।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो का गियरबॉक्स और ट्रांसमिशन

जॉन डियर 5405 गियरप्रो में ड्यूल क्लच और कॉलर शिफ्ट ट्रांसमिशन दिए गए हैं। इसमें 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर मिलते हैं। गियर के अलग-अलग विकल्प होने से किसान खेत की स्थिति, काम के प्रकार और उपकरण की जरूरत के अनुसार उपयुक्त गियर चुन सकते हैं। जुताई, बुवाई और ढुलाई जैसे कार्यों में अलग-अलग गति की जरूरत होती है। ऐसे में कई गियर विकल्प मिलने से ट्रैक्टर को विभिन्न परिस्थितियों में चलाने में मदद मिलती है। इस ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 2.0 से 32.6 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 3.5 से 22.9 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। इसमें 12 वोल्ट की 100 Ah बैटरी और 12 वोल्ट का 40 A अल्टरनेटर दिए गए हैं। ये विद्युत प्रणाली ट्रैक्टर के इलेक्ट्रिकल उपकरणों और बैटरी चार्जिंग से जुड़े कार्यों में मदद करती है।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो के ब्रेक और स्टीयरिंग

इस ट्रैक्टर में ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक दिए गए हैं। इस प्रकार के ब्रेक में ब्रेकिंग सिस्टम के हिस्से तेल के संपर्क में रहते हैं, जिससे घिसाव और गर्मी को नियंत्रित करने में सहायता मिल सकती है। खेतों में भारी उपकरणों के साथ काम करते समय और ट्रॉली से परिवहन करते समय प्रभावी ब्रेकिंग व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। जॉन डियर 5405 गियरप्रो में पावर स्टीयरिंग दिया गया है। इससे ट्रैक्टर को मोड़ने और दिशा नियंत्रित करने में चालक को सहायता मिलती है। लंबे समय तक खेत में काम करने, अलग-अलग क्यारियों में मुड़ने और संकरे स्थानों पर ट्रैक्टर चलाने के दौरान पावर स्टीयरिंग उपयोगी साबित हो सकता है।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो का पीटीओ सिस्टम

जॉन डियर 5405 गियरप्रो में इंडिपेंडेंट पीटीओ दिया गया है, जिसमें 6-स्प्लाइन शाफ्ट और मल्टी-स्पीड की सुविधा बताई गई है। इसकी पीटीओ स्पीड 2100 इंजन आरपीएम पर 540 आरपीएम और 1600 इंजन आरपीएम पर 540 आरपीएम के रूप में दी गई है। पीटीओ यानी पावर टेक-ऑफ ट्रैक्टर के इंजन से शक्ति लेकर उससे जुड़े कृषि उपकरणों को चलाने में मदद करता है। इसका उपयोग थ्रेशर, रोटावेटर और अन्य अनुकूल पीटीओ चालित मशीनों के संचालन में किया जा सकता है। इंडिपेंडेंट पीटीओ की सुविधा उपकरणों के संचालन में उपयोगी होती है। किसी भी उपकरण को जोड़ने से पहले उसके शाफ्ट, पीटीओ स्पीड और पावर संबंधी आवश्यकताओं का मिलान करना जरूरी है।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो की फ्यूल टैंक क्षमता

इस ट्रैक्टर में 68 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। बड़ा फ्यूल टैंक खेतों में लंबे समय तक काम करने और परिवहन के दौरान बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत कम करने में मदद कर सकता है। खासकर बुवाई और जुताई के व्यस्त मौसम में यह सुविधा उपयोगी होती है। हालांकि, वास्तविक डीजल खपत खेत की मिट्टी, ट्रैक्टर पर पड़ने वाले भार, इस्तेमाल किए जा रहे उपकरण, काम करने की गति और रखरखाव पर निर्भर करती है। इसलिए केवल फ्यूल टैंक की क्षमता के आधार पर ट्रैक्टर की कुल ईंधन लागत का अनुमान नहीं लगाना चाहिए।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो के डायमेंशन और वजन

जॉन डियर 5405 गियरप्रो का वजन 2280 किलोग्राम है। इसका व्हीलबेस 2050 मिमी, कुल लंबाई 3515 मिमी और चौड़ाई 1870 मिमी है। ट्रैक्टर का ग्राउंड क्लीयरेंस 425 मिमी दिया गया है। ट्रैक्टर का वजन और व्हीलबेस खेत में स्थिरता और उपकरणों के साथ काम करने के अनुभव को प्रभावित करते हैं। वहीं, 425 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस खेत में फसल की कतारों और अलग-अलग सतहों पर काम करने के दौरान उपयोगी हो सकता है। ट्रैक्टर खरीदते समय खेतों की स्थिति, उपलब्ध रास्तों की चौड़ाई और इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों को ध्यान में रखना चाहिए।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो की हाइड्रोलिक और लिफ्टिंग क्षमता

इस ट्रैक्टर में 2000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें ऑटोमैटिक डेप्थ और ड्राफ्ट कंट्रोल की सुविधा भी मिलती है। हाइड्रोलिक सिस्टम ट्रैक्टर के पीछे लगाए जाने वाले कृषि उपकरणों को उठाने और नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लिफ्टिंग क्षमता के कारण किसान उपयुक्त वजन और क्षमता वाले कृषि उपकरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं। डेप्थ कंट्रोल उपकरण को मिट्टी में निर्धारित गहराई पर बनाए रखने में मदद करता है, जबकि ड्राफ्ट कंट्रोल खेत में काम करते समय उपकरण पर पड़ने वाले खिंचाव के अनुसार नियंत्रण में सहायता करता है। किसानों को ध्यान रखना चाहिए कि किसी उपकरण का चयन केवल उसकी कुल क्षमता देखकर न करें। उपकरण का वजन, उसका प्रकार, ट्रैक्टर की अनुकूलता और खेत की परिस्थितियां भी महत्वपूर्ण हैं।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो के टायर साइज

जॉन डियर 5405 गियरप्रो में फ्रंट टायर के विकल्प 6.5 x 20 और 11.2 x 24 दिए गए हैं। वहीं, रियर टायर के विकल्प 16.9 x 30 और 18.4 x 30 हैं। टायर का सही आकार खेत में पकड़, भार उठाने की क्षमता और ट्रैक्टर के प्रदर्शन को प्रभावित करता है। अलग-अलग कृषि कार्यों और खेतों की परिस्थितियों के अनुसार टायर का चुनाव महत्वपूर्ण होता है। ट्रैक्टर खरीदने से पहले डीलर से उपलब्ध टायर विकल्पों की पुष्टि कर लेनी चाहिए, ताकि किसान अपनी जरूरत के अनुसार सही विकल्प चुन सकें।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो की वारंटी

जॉन डियर 5405 गियरप्रो पर दी गई जानकारी के अनुसार 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी उपलब्ध है। वारंटी की शर्तें, इसमें शामिल पुर्जे और लागू होने वाले नियम खरीद के समय कंपनी की आधिकारिक वारंटी नीति के अनुसार जांचने चाहिए। ट्रैक्टर की नियमित सर्विसिंग, सही इंजन ऑयल और निर्धारित रखरखाव अपनाने से उसके प्रदर्शन को बनाए रखने में मदद मिलती है।

## जॉन डियर 5405 गियरप्रो की कीमत?

जॉन डियर 5405 गियरप्रो ट्रैक्टर की दी गई कीमत ₹15.02 लाख से ₹15.64 लाख के बीच है। यह कीमत एक्स-शोरूम या अन्य आधार पर अलग-अलग हो सकती है। राज्य, शहर, डीलर, चुने गए

टायर विकल्प और अन्य शुल्कों के अनुसार अंतिम खरीद मूल्य में अंतर आ सकता है। इसलिए ट्रैक्टर खरीदने से पहले नजदीकी अधिकृत डीलर से ऑन-रोड कीमत और उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी लेना उचित रहेगा।

यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए विचार करने योग्य विकल्प है, जिन्हें जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने और ढुलाई जैसे कार्यों के लिए शक्तिशाली ट्रैक्टर की आवश्यकता है। खरीदने से पहले किसान अपने खेत के आकार, मिट्टी की स्थिति, नियमित रूप से इस्तेमाल होने वाले कृषि उपकरणों, ईंधन खर्च और बजट के आधार पर इसकी तुलना अन्य ट्रैक्टरों से जरूर करें।

# फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर: धान की कटाई के लिए बेस्ट हार्वेस्टर




भारत में खेती के दौरान फसल की कटाई एक महत्वपूर्ण और मेहनत वाला काम है। खासकर धान और गेहूं जैसी फसलों की कटाई के समय किसानों को कम समय में अधिक क्षेत्र की फसल काटने की जरूरत होती है। ऐसे में आधुनिक हार्वेस्टर मशीनें किसानों के काम को आसान बनाने और कटाई में लगने वाले समय को कम करने में मदद करती हैं।

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर एक ऐसी कृषि मशीन है, जिसे धान, गेहूं और सोयाबीन जैसी फसलों की कटाई के लिए तैयार किया गया है। फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर MCH-220-88 और MCH-220-102 मॉडल विकल्पों में उपलब्ध है। इनमें क्रमशः 88 एचपी और 102 एचपी की पावर क्षमता, 2200 मिमी की वर्किंग चौड़ाई, रबर ट्रैक और आधुनिक थ्रेशिंग सिस्टम जैसी खूबियां दी गई हैं। कंपनी की ओर से बताई गई जानकारी के अनुसार, यह हार्वेस्टर प्रतिदिन लगभग 8 से 14 एकड़ क्षेत्र में कटाई कर सकता है। हालांकि, वास्तविक उत्पादन फसल की स्थिति, खेत की बनावट, नमी और मशीन चलाने के तरीके पर निर्भर करेगा।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर के फीचर्स

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर में कई ऐसे फीचर्स दिए गए हैं, जो फसल की कटाई, दानों को अलग करने और खेत में मशीन के संचालन को सुविधाजनक बनाने में मदद करते हैं। इसके प्रमुख फीचर्स में रबर ट्रैक, हाइड्रोस्टैटिक ट्रांसमिशन (HST), बुलेट रोटर आधारित एक्सियल फ्लो थ्रेशिंग सिस्टम और 1.6 घन मीटर क्षमता वाला ग्रेन टैंक शामिल हैं। इस मशीन में सन रूफ की सुविधा दी गई है, जो ऑपरेटर को धूप से बचाने में मदद करती है। इसके अलावा, पानी के तापमान, बैटरी, ऑयल और ग्रेन टैंक से संबंधित अलार्म सिस्टम दिए गए हैं। ये अलार्म मशीन की स्थिति पर नज़र रखने और ज़रूरी संकेत मिलने पर समय रहते ध्यान देने में मदद करते हैं।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर का इंजन

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर के MCH-220-88 मॉडल में 88 एचपी और MCH-220-102 मॉडल में 102 एचपी की इंजन क्षमता दी गई है। दोनों मॉडल का इंजन 2600 आरपीएम पर काम करता है। स्पेसिफिकेशन के अनुसार, इसमें वर्टिकल, वाटर-कूल्ड

इंजन के साथ फ्यूल इंजेक्शन और टर्बोचार्जर दिया गया है। दोनों मॉडल में इंजन की क्षमता अलग-अलग है। MCH-220-88 में 2980 सीसी और MCH-220-102 में 3260 सीसी का इंजन दिया गया है। इंजन की यह क्षमता मशीन को फसल काटने, फसल को थ्रेशिंग यूनिट तक पहुंचाने और दानों को अलग करने जैसी प्रक्रियाओं में आवश्यक शक्ति प्रदान करने में मदद करती है।

इस हार्वेस्टर में लाइट डीजल ऑयल का इस्तेमाल होता है और इसमें 170 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता लंबे समय तक काम करने के दौरान बार-बार ईंधन भरवाने की जरूरत कम कर सकती है। हालांकि, वास्तविक डीजल खपत खेत की स्थिति, फसल की उपज, मशीन पर पड़ने वाले भार और संचालन की गति पर निर्भर करती है।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर का गियरबॉक्स और HST सिस्टम

इस हार्वेस्टर में हाई, लो और मीडियम स्पीड के विकल्पों वाला गियर सिस्टम दिया गया है। इसके साथ दक्षिण कोरिया से आयातित 45 सीसी HST यानी हाइड्रोस्टैटिक ट्रांसमिशन का उल्लेख किया गया है। HST सिस्टम मशीन की गति और संचालन को नियंत्रित करने में मदद करता है।

फसल की कटाई के दौरान खेत की स्थिति एक जैसी नहीं रहती। कहीं जमीन समतल होती है, तो कहीं मिट्टी नरम या ऊबड़-खाबड़ हो सकती है। ऐसे में गति को परिस्थिति के अनुसार नियंत्रित करना उपयोगी होता है। किसान को मशीन चलाते समय खेत की स्थिति और फसल के घनत्व के अनुसार उचित गति रखनी चाहिए, ताकि कटाई और दानों की सफाई का काम बेहतर तरीके से हो सके।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर का रबर ट्रैक सिस्टम

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर में पहियों के बजाय रबर ट्रैक दिए गए हैं। रबर ट्रैक मशीन के वजन को जमीन पर वितरित करने और खेत में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। धान के खेतों में, जहां मिट्टी अधिक नम या नरम हो सकती है, ट्रैक सिस्टम उपयोगी साबित हो सकता है। MCH-220-88 मॉडल में ग्राउंड कॉन्टैक्ट की लंबाई 1620 मिमी और MCH-220-102 मॉडल में 1750 मिमी दी गई है। दोनों मॉडल में ट्रैक का सेंटर डिस्टेंस 1250 मिमी है। ट्रैक का आकार क्रमशः 500 × 90 × 51 और 550 × 90 × 56 मिमी दिया गया है। मशीन का न्यूनतम ग्राउंड क्लीयरेंस मॉडल के अनुसार 320 मिमी और 355 मिमी है। रबर ट्रैक की सही देखभाल और नियमित जांच जरूरी है। खेत में काम शुरू करने से पहले ट्रैक की स्थिति और मशीन के चलने वाले हिस्सों का निरीक्षण करना चाहिए।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की कटाई क्षमता

इस हार्वेस्टर की वर्किंग चौड़ाई 2200 मिमी यानी 2.2 मीटर है। इसमें ग्रेन लिफ्टर के लिए डिवाइडर दिया गया है और रील बैट का व्यास 922.5 मिमी तथा लंबाई 2130 मिमी है। कटाई यूनिट फसल को मशीन के अंदर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें स्टबल हाइट यानी कटाई के बाद खेत में बचने वाले ठूंठ की ऊंचाई 40 मिमी या उससे अधिक बताई गई है। फसल के गिर जाने की स्थिति में मशीन का प्रवाह और संचालन फसल के झुकाव के अनुसार प्रभावित हो सकता है। दिए गए स्पेसिफिकेशन में फ्लो के लिए 85 डिग्री से कम और रिवर्स के लिए 70 डिग्री से कम का उल्लेख है। मशीन की वास्तविक कटाई क्षमता फसल की ऊंचाई, फसल के घनत्व, खेत की नमी, उपज और ऑपरेटर के अनुभव पर निर्भर करेगी। इसलिए किसान को अपनी फसल और खेत की परिस्थितियों के अनुसार मशीन का प्रदर्शन जांचना चाहिए।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर का थ्रेशिंग सिस्टम

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर में एक्सियल फ्लो टाइप थ्रेशिंग सिस्टम और बुलेट रोटर दिया गया है। इसकी थ्रेशिंग यूनिट में बीट बार का इस्तेमाल किया गया है। थ्रेशिंग रोटर का व्यास 600 मिमी और लंबाई 2000 मिमी है। इसकी रोटेशन स्पीड 705 आरपीएम दी गई है। थ्रेशिंग सिस्टम का काम कटाई के बाद फसल से दानों को अलग करना होता है। इसके बाद मशीन की सफाई और सेपरेशन यूनिट दानों से भूसा तथा अन्य हल्के अवशेष अलग करने में मदद करती है। इस मॉडल में वाइब्रेटिंग स्क्रीन और एयर सेपरेशन यानी हवा के जरिए सफाई की व्यवस्था दी गई है। ऊपरी और निचली छलनियों का कुल बताया गया क्षेत्रफल 1.645 वर्ग मीटर है। सफाई सिस्टम का उचित संचालन साफ अनाज प्राप्त करने में मदद कर सकता है। हालांकि, अनाज की गुणवत्ता और टूटे दानों की मात्रा फसल की नमी, मशीन की सेटिंग, कटाई की गति और फसल की स्थिति से प्रभावित हो सकती है।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की ग्रेन टैंक क्षमता

इस हार्वेस्टर में 1.6 घन मीटर क्षमता का ग्रेन टैंक दिया गया है। कटाई और थ्रेशिंग के बाद अलग हुए अनाज को इस टैंक में जमा किया जाता है। इसमें 340 डिग्री का ग्रेन डिस्चार्ज एंगल बताया गया है, जिससे अनाज खाली करने की प्रक्रिया में सुविधा मिल सकती है।

ग्रेन टैंक की क्षमता मशीन के कामकाज में महत्वपूर्ण है, क्योंकि टैंक भरने के बाद अनाज को बाहर निकालना पड़ता है। किसान को कटाई के दौरान टैंक के भरने पर नजर रखनी चाहिए, ताकि अनाज का नुकसान न हो और मशीन का संचालन व्यवस्थित बना रहे।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की कार्यक्षमता

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की बताई गई कटाई क्षमता लगभग 8 से 14 एकड़ प्रतिदिन है। यह क्षमता किसानों और कस्टम हायरिंग सेंटर चलाने वाले लोगों के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है, क्योंकि कम समय में अधिक क्षेत्र की कटाई करने से काम की योजना बनाना आसान होता है। हालांकि, 8 से 14 एकड़ प्रतिदिन की क्षमता को हर खेत में समान नहीं माना जा सकता। खेत में नमी, फसल की पैदावार, खेत का आकार, मेड़ और मोड़, मशीन की गति तथा अनाज खाली करने में लगने वाला समय वास्तविक कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं। खरीदने से पहले अपने क्षेत्र की फसल और खेत की परिस्थितियों में मशीन का प्रदर्शन जानना उपयोगी रहेगा।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर किन फसलों के लिए उपयोगी है?

कंपनी के दिए गए स्पेसिफिकेशन के अनुसार, इस हार्वेस्टर की मानक फसलों में गेहूं, धान और सोयाबीन शामिल हैं। सरसों और मक्का की कटाई के लिए वैकल्पिक अटैचमेंट का उल्लेख किया गया है। इसका मतलब है कि अलग-अलग फसलों के लिए उपयुक्त अटैचमेंट और मशीन की सेटिंग की जरूरत पड़ सकती है। धान की कटाई के दौरान खेत में नमी और फसल के झुकने की स्थिति मशीन के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। वहीं, गेहूं और सोयाबीन की कटाई में फसल की बनावट और दानों की प्रकृति के अनुसार मशीन की सेटिंग महत्वपूर्ण होती है। सरसों और मक्का के लिए खरीदने से पहले संबंधित अटैचमेंट की उपलब्धता, कीमत और अनुकूलता की पुष्टि अधिकृत डीलर से करनी चाहिए।

## फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की कीमत

फील्डकिंग स्वदेश मल्टी क्रॉप हार्वेस्टर की बताई गई कीमत ₹23 लाख से ₹25.5 लाख के बीच है। वास्तविक कीमत मॉडल, चुने गए इंजन विकल्प, अतिरिक्त अटैचमेंट, स्थान और डीलर के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। किसान इस मशीन को खरीदने से पहले दोनों मॉडल की इंजन क्षमता, वजन, ट्रैक साइज, ईंधन खर्च और अपने खेतों के

SONALIKA
जीतने का दम

# दमदार ट्रैक्टर,
## जो दे आपके भरोसे को दम

सोनालीका सिकंदर
DI 42 P+




2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nmटॉर्क

ADVANCED 5G
HYDRAULICS
2000 kg
लिफ़्ट कॅपेसिटी

कुल क्षेत्रफल की तुलना कर सकते हैं। यदि मशीन का इस्तेमाल अपने खेत के साथ दूसरे किसानों के खेतों में कटाई के लिए भी करना है, तो संभावित काम के दिनों, परिवहन, रखरखाव और ऑपरेटर की लागत को ध्यान में रखकर निवेश का आकलन करना चाहिए।

# जॉन डियर 5050 डी VS न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर: कीमत, फीचर और स्पेसिफिकेशन्स




भारत में 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों में किया जा सकता है। इस श्रेणी में जॉन डियर 5050 डी और न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर दो ऐसे ट्रैक्टर हैं, जिन्हें किसान अपनी खेती की जरूरतों के अनुसार खरीदने पर विचार कर सकते हैं। दोनों ट्रैक्टरों में 3 सिलेंडर वाले इंजन दिए गए हैं और दोनों 50 एचपी श्रेणी में आते हैं। हालांकि, इंजन की क्षमता, पीटीओ पावर, गियरबॉक्स, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, वजन, वारंटी और कीमत के मामले में दोनों के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलते हैं।

जॉन डियर 5050 डी में 2900 सीसी का इंजन, 42.5 एचपी पीटीओ पावर, पावर स्टीयरिंग और 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। वहीं, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में 2931 सीसी का इंजन, 46 एचपी पीटीओ पावर और 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता मिलती है। कीमत की बात करें तो जॉन डियर 5050 डी की बताई गई कीमत 8.66 लाख रुपये से 9.02 लाख रुपये तक है, जबकि न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की कीमत 8.18 लाख रुपये से 8.52 लाख रुपये तक बताई गई है। आइए, दोनों ट्रैक्टरों के इंजन, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स, कीमत और उपयोगिता के बीच विस्तार से अंतर जानते हैं।

## जॉन डियर 5050 डी VS न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर: इंजन और पावर की तुलना

जॉन डियर 5050 डी और न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर दोनों 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर हैं, लेकिन इनके इंजन की क्षमता और रेटेड आरपीएम अलग-अलग हैं। जॉन डियर 5050 डी में 3 सिलेंडर वाला 2900 सीसी इंजन दिया गया है, जो 2100 आरपीएम पर काम करता है। इसमें ड्राई टाइप ड्यूल एलिमेंट एयर फिल्टर मिलता है, जो इंजन में प्रवेश करने वाली हवा से धूल और अन्य कणों को अलग करने में मदद करता है। इसका कूलिंग सिस्टम कूलेंट कूल्ड विद ओवरफ्लो रिजर्वायर प्रकार का है। दूसरी ओर, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में 3 सिलेंडर वाला 2931 सीसी इंजन मिलता है, जिसकी रेटेड स्पीड 2500 आरपीएम बताई गई है। इसमें ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर विद प्री-क्लीनर और वाटर-कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिए गए हैं। इंजन की क्षमता के आधार पर न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर का इंजन 31 सीसी बड़ा है, लेकिन केवल सीसी और आरपीएम के आधार पर किसी ट्रैक्टर की वास्तविक ताकत या ईंधन की खपत का निर्णय नहीं किया जा सकता। इसके लिए इंजन के टॉर्क, कार्यक्षमता और

खेत में वास्तविक प्रदर्शन को भी देखना जरूरी है। सामान्य खेती, जुताई और ढुलाई के लिए दोनों ट्रैक्टरों पर विचार किया जा सकता है। किसानों को अपनी मिट्टी, खेतों के आकार, काम के घंटों और इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों के अनुसार ट्रैक्टर का चुनाव करना चाहिए।

## गियरबॉक्स और ट्रांसमिशन में अंतर

जॉन डियर 5050 डी में कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। इसके गियरबॉक्स में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर या विकल्प के रूप में 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर मिल सकते हैं। इसमें सिंगल या ड्यूल क्लच का विकल्प भी दिया गया है। इसके मुकाबले न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में डबल क्लच और इंडिपेंडेंट पीटीओ लीवर दिया गया है। इसमें फुली कॉन्स्टेंट मेश या पार्शियल सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन का विकल्प बताया गया है और गियरबॉक्स में 8 फॉरवर्ड तथा 2 रिवर्स गियर मिलते हैं। गियरबॉक्स का अंतर ट्रैक्टर चलाने के तरीके और विभिन्न कृषि कार्यों में गति चुनने की सुविधा को प्रभावित करता है। जॉन डियर 5050 डी में उपलब्ध 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर वाला विकल्प उन किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है, जिन्हें अलग-अलग गति के विकल्पों की जरूरत होती है। हालांकि, यह विकल्प संबंधित वेरिएंट पर निर्भर करेगा। न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर का डबल क्लच और इंडिपेंडेंट पीटीओ लीवर कृषि उपकरणों के संचालन में उपयोगी सुविधाएं हैं। किसान को ट्रैक्टर खरीदने से पहले डीलर से संबंधित वेरिएंट का गियरबॉक्स और क्लच विकल्प स्पष्ट रूप से जांच लेना चाहिए।

## फॉरवर्ड और रिवर्स स्पीड की तुलना

जॉन डियर 5050 डी की फॉरवर्ड स्पीड 2.97 से 32.44 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 3.89 से 14.10 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। वहीं, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 32.35 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 16.47 किलोमीटर प्रति घंटा है। इन आंकड़ों के अनुसार दोनों ट्रैक्टरों की बताई गई अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग समान है। न्यू हॉलैंड की बताई गई रिवर्स स्पीड अधिक है, जबकि जॉन डियर की फॉरवर्ड स्पीड का अधिकतम आंकड़ा थोड़ा ज्यादा है। फॉरवर्ड स्पीड का महत्व खेतों से सामान ढोने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने और विभिन्न कार्यों के दौरान समय प्रबंधन में होता है। रिवर्स स्पीड संकरी जगहों पर ट्रैक्टर को पीछे करने और उपकरणों के साथ काम करते समय उपयोगी हो सकती है। फिर भी, किसानों को केवल अधिकतम गति के आधार पर ट्रैक्टर नहीं चुनना चाहिए। वास्तविक गति गियर, ट्रैक्टर के भार, टायर के आकार और काम करने की परिस्थितियों के अनुसार बदल सकती है। खेत में सुरक्षित संचालन और ट्रॉली के साथ उचित गति बनाए रखना सबसे जरूरी है।

## ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम की तुलना

जॉन डियर 5050 डी में ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जबकि न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में रियर ऑयल इमर्स्ड मल्टी डिस्क ब्रेक मिलते हैं। दोनों प्रकार के ब्रेक ट्रैक्टर को नियंत्रित करने और गति कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऑयल इमर्स्ड ब्रेक में ब्रेकिंग से जुड़े हिस्से तेल के संपर्क में रहते हैं, जिससे घिसाव और गर्मी को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। खेतों में जुताई, ट्रॉली से ढुलाई और असमान रास्तों पर चलते समय अच्छी ब्रेकिंग व्यवस्था जरूरी होती है। हालांकि, ब्रेकिंग का वास्तविक प्रदर्शन रखरखाव, ट्रैक्टर के भार और संचालन की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। स्टीयरिंग की बात करें तो दोनों ट्रैक्टरों में पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है। पावर स्टीयरिंग ट्रैक्टर को मोड़ने में लगने वाले प्रयास को कम करने में मदद करती है, खासकर तब जब खेतों में बार-बार मोड़ लेना हो या ट्रैक्टर पर कृषि उपकरण लगे हों। किसान को ट्रैक्टर खरीदते समय ब्रेक और स्टीयरिंग का व्यावहारिक परीक्षण करना चाहिए। इसके साथ ही नियमित सर्विस कराना और

ब्रेकिंग सिस्टम में किसी तरह की खराबी आने पर तुरंत जांच करवाना भी जरूरी है।

## फ्यूल टैंक और इलेक्ट्रिकल सिस्टम

जॉन डियर 5050 डी और न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर दोनों में 60 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। इससे दोनों ट्रैक्टरों में ईंधन रखने की क्षमता समान रहती है। हालांकि, एक बार टैंक भरने पर ट्रैक्टर कितने घंटे काम करेगा, यह इंजन की खपत, खेत की मिट्टी, उपकरणों के भार और काम करने के तरीके पर निर्भर करता है। इसलिए समान फ्यूल टैंक क्षमता का मतलब यह नहीं है कि दोनों ट्रैक्टरों की ईंधन खपत भी समान होगी।

इलेक्ट्रिकल सिस्टम में जॉन डियर 5050 डी में 12 वोल्ट, 88 एएच की बैटरी और 12 वोल्ट, 40 एम्पियर का अल्टरनेटर दिया गया है। न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में 88 एएच की बैटरी और 45 एम्पियर का अल्टरनेटर मिलता है। इस प्रकार बैटरी की बताई गई क्षमता दोनों में समान है, जबकि न्यू हॉलैंड के अल्टरनेटर की क्षमता 5 एम्पियर अधिक है। इलेक्ट्रिकल सिस्टम ट्रैक्टर के स्टार्टिंग सिस्टम और अन्य विद्युत उपकरणों के संचालन में मदद करता है। किसानों को बैटरी, वायरिंग और अल्टरनेटर की नियमित जांच करवानी चाहिए, ताकि खेत में काम करते समय अनावश्यक परेशानी से बचा जा सके।

## वजन, व्हीलबेस और डाइमेंशन में अंतर

जॉन डियर 5050 डी का वजन 1870 किलोग्राम, व्हीलबेस 1970 मिमी, कुल लंबाई 3430 मिमी, चौड़ाई 1830 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 430 मिमी बताया गया है। वहीं, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर का वजन 2060 किलोग्राम, व्हीलबेस 2045 मिमी, कुल लंबाई 3450 मिमी, चौड़ाई 1815 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 445 मिमी है। इन आंकड़ों के अनुसार न्यू हॉलैंड का वजन 190 किलोग्राम अधिक है और इसका व्हीलबेस 75 मिमी लंबा है। इसकी लंबाई 20 मिमी अधिक है, जबकि चौड़ाई 15 मिमी कम और ग्राउंड क्लीयरेंस 15 मिमी अधिक है।

ट्रैक्टर का वजन, व्हीलबेस और ग्राउंड क्लीयरेंस खेतों में काम करने तथा अलग-अलग रास्तों पर संचालन को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि, अधिक वजन होने का मतलब अपने आप बेहतर ट्रैक्शन या प्रदर्शन नहीं होता। टायर, वजन का वितरण, मिट्टी की नमी और उपकरणों का भार भी महत्वपूर्ण होते हैं। इसी तरह, ग्राउंड क्लीयरेंस खेतों में असमान सतह पर उपयोगी हो सकता है, लेकिन वास्तविक उपयोगिता फसल की ऊंचाई और खेत की स्थिति पर भी निर्भर करती है। किसान को अपने खेतों की परिस्थितियों के अनुसार दोनों ट्रैक्टरों का आकलन करना चाहिए।

## हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता और कृषि उपकरणों का इस्तेमाल

हाइड्रोलिक क्षमता की बात करें तो जॉन डियर 5050 डी में 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसमें ऑटोमैटिक डेप्थ और ड्राफ्ट कंट्रोल की सुविधा मिलती है। दूसरी ओर, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की लिफ्टिंग क्षमता 1700 किलोग्राम है। इसमें ऑटोमैटिक डेप्थ और ड्राफ्ट कंट्रोल, मिक्स्ड कंट्रोल, लिफ्ट-ओ-मैटिक विद हाइट लिमिटेशन और रिस्पॉन्स कंट्रोल जैसी सुविधाओं का उल्लेख किया गया है।

इस तुलना में न्यू हॉलैंड की बताई गई लिफ्टिंग क्षमता 100 किलोग्राम अधिक है। हाइड्रोलिक सिस्टम ट्रैक्टर के पीछे लगे उपकरणों को उठाने और काम के दौरान उनकी स्थिति नियंत्रित करने में मदद करता है। अधिक लिफ्टिंग क्षमता उन किसानों के लिए उपयोगी हो सकती है, जिन्हें अपेक्षाकृत भारी उपकरणों के साथ काम करना होता है। हालांकि, किसान को उपकरण का वास्तविक वजन, उसका संतुलन और ट्रैक्टर निर्माता की निर्धारित सीमाएं भी देखनी चाहिए। केवल लिफ्टिंग क्षमता के आंकड़े के आधार पर किसी उपकरण को उपयुक्त नहीं मानना चाहिए।

## टायर साइज और खेतों में उपयोगिता

जॉन डियर 5050 डी में फ्रंट टायर के लिए 6.00 x 16 और 7.50 x 16 के विकल्प दिए गए हैं। इसके रियर टायर में 14.9 x 28 और 16.9 x 28 के विकल्प मिलते हैं। न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में भी 6.0 x 16 और 7.50 x 16 के फ्रंट टायर विकल्प तथा 14.9 x 28 और 16.9 x 28 के रियर टायर विकल्प बताए गए हैं। इस प्रकार दिए गए विवरण के अनुसार दोनों ट्रैक्टरों में टायर के आकार के विकल्प काफी हद तक समान हैं।

टायर का आकार ट्रैक्टर की जमीन पर पकड़, स्थिरता और खेत में संचालन को प्रभावित करता है। किसान को टायर का चुनाव करते समय मिट्टी की प्रकृति, खेत में नमी, इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण और ट्रैक्टर के कार्यों को ध्यान में रखना चाहिए। बड़े आकार के टायर का विकल्प चुनने से पहले यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि संबंधित टायर उस वेरिएंट के लिए अनुमोदित है। टायरों में उचित हवा का दबाव बनाए रखना और उनकी नियमित जांच करना भी ट्रैक्टर के सही संचालन के लिए जरूरी है।

## वारंटी में कौन-सा ट्रैक्टर आगे है?

वारंटी के मामले में जॉन डियर 5050 डी के लिए 5000 घंटे या 5 वर्ष का विवरण दिया गया है। वहीं, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर के लिए 6000 घंटे या 6 वर्ष की वारंटी बताई गई है। दिए गए विवरण के अनुसार न्यू हॉलैंड की वारंटी अवधि एक वर्ष और 1000 घंटे अधिक है। लंबी वारंटी किसान के लिए उपयोगी हो सकती है, क्योंकि इससे निर्धारित नियमों और शर्तों के तहत पात्र खराबियों पर सहायता मिल सकती है।

हालांकि, वारंटी में क्या-क्या शामिल है, यह जानना उतना ही जरूरी है जितना उसकी अवधि जानना। वारंटी के अंतर्गत आने वाले पुर्जे, नियमित सर्विस की शर्तें, उपभोग्य सामग्री और अन्य अपवाद कंपनी की नीति के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए किसान को ट्रैक्टर खरीदते समय वारंटी पुस्तिका ध्यान से पढ़नी चाहिए और अधिकृत डीलर से लिखित पुष्टि लेनी चाहिए। इससे भविष्य में सर्विस या मरम्मत से जुड़ी शर्तों को समझने में आसानी होगी।

## जॉन डियर 5050 डी और न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की कीमत में अंतर

कीमत की बात करें तो जॉन डियर 5050 डी की बताई गई कीमत 8.66 लाख रुपये से 9.02 लाख रुपये तक है। वहीं, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की कीमत 8.18 लाख रुपये से 8.52 लाख रुपये तक बताई गई है। इन कीमतों के अनुसार न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर की शुरुआती कीमत जॉन डियर 5050 डी से 48,000 रुपये कम है। दोनों की बताई गई अधिकतम कीमतों के बीच भी 50,000 रुपये का अंतर है।

हालांकि, ट्रैक्टर की वास्तविक कीमत राज्य, जिले, डीलर, वेरिएंट, चुने गए फीचर्स, बीमा, पंजीकरण और अन्य शुल्कों के आधार पर बदल सकती है। इसलिए किसान को खरीदारी से पहले अपने नजदीकी अधिकृत डीलर से एक्स-शोरूम और ऑन-रोड कीमत की जानकारी लेनी चाहिए। इसके अलावा, केवल शुरुआती कीमत के आधार पर निर्णय लेने के बजाय ट्रैक्टर के फीचर्स, वारंटी, सर्विस की उपलब्धता और खेती में होने वाले वास्तविक उपयोग को भी ध्यान में रखना चाहिए।

## किसानों के लिए कौन-सा ट्रैक्टर चुनना उपयोगी रहेगा?

जॉन डियर 5050 डी और न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर दोनों 50 एचपी श्रेणी के ट्रैक्टर हैं, लेकिन इनकी विशेषताएं अलग-अलग जरूरतों को ध्यान में रखकर तुलना करने योग्य हैं। जॉन डियर 5050 डी में 2900 सीसी इंजन, 42.5 एचपी पीटीओ पावर, गियरबॉक्स के विकल्प और 1870 किलोग्राम वजन मिलता है। दूसरी ओर, न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर में 2931 सीसी इंजन, 46 एचपी पीटीओ पावर, 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और दिए गए विवरण के अनुसार लंबी वारंटी

मिलती है। इसकी बताई गई कीमत भी जॉन डियर 5050 डी से कम है।

यदि किसान के लिए पीटीओ पावर, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता, वारंटी और शुरुआती कीमत महत्वपूर्ण हैं, तो न्यू हॉलैंड 3630 टीएक्स सुपर के फीचर्स पर विचार किया जा सकता है। वहीं, जॉन डियर 5050 डी में उपलब्ध गियरबॉक्स और क्लच विकल्प उन किसानों के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं, जिनकी जरूरतों के अनुसार संबंधित वेरिएंट उपयुक्त बैठता है। अंतिम निर्णय लेने से पहले दोनों ट्रैक्टरों का डेमो लेना, अपने पसंदीदा कृषि उपकरणों के साथ उनकी उपयुक्तता जांचना और स्थानीय डीलर से कीमत, वारंटी तथा सर्विस की जानकारी प्राप्त करना बेहतर रहेगा।

# प्रीत 6049 NT - 4WD ट्रैक्टर: फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत




## प्रीत 6049 NT - 4WD: 60 एचपी में शक्तिशाली और हैवी-ड्यूटी कृषि ट्रैक्टर

भारतीय कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और दमदार क्षमता वाले ट्रैक्टरों की मांग लगातार बढ़ रही है। किसानों को ऐसे ट्रैक्टर की जरूरत होती है, जो खेतों में जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने और अन्य कृषि कार्यों के साथ-साथ ढुलाई जैसे काम भी आसानी से कर सके। प्रीत 6049 NT 4WD ट्रैक्टर 60 HP की श्रेणी में आने वाला एक विकल्प है, जिसे चार पहिया ड्राइव सिस्टम के साथ पेश किया गया है। इसकी इंजन क्षमता, पीटीओ पावर, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता और मल्टी-स्पीड ट्रांसमिशन इसे विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयोगी बना सकते हैं। आइए इस ट्रैक्टर के इंजन, फीचर्स, ट्रांसमिशन, कीमत और उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानते हैं।

## प्रीत 6049 NT 4WD का इंजन और पावर

प्रीत 6049 NT 4WD में 3 सिलेंडर वाला 3066 CC इंजन दिया गया है, जो 60 HP की पावर श्रेणी में आता है। इसका इंजन 2200 RPM पर रेटेड स्पीड के साथ काम करता है। 60 HP की क्षमता के कारण यह ट्रैक्टर उपयुक्त कृषि उपकरणों के साथ खेत तैयार करने, जुताई करने, कल्टीवेटर चलाने और अन्य कृषि कार्यों के लिए उपयोगी हो सकता है। इंजन की क्षमता के साथ-साथ ट्रैक्टर का ट्रांसमिशन, पीटीओ पावर और हाइड्रोलिक सिस्टम भी उसके वास्तविक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

## प्रीत 6049 NT 4WD का ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

प्रीत 6049 NT 4WD में हेवी ड्यूटी ड्राई टाइप डुअल क्लच दिया गया है। इसके साथ सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन और 12 फॉरवर्ड तथा 12 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स मिलता है। अधिक गियर विकल्प होने से किसान अलग-अलग कृषि कार्यों और परिस्थितियों के अनुसार ट्रैक्टर की गति चुन सकते हैं। खेत में जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने और अन्य उपकरणों के साथ काम करने के दौरान उचित गति का चयन कार्य को व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद कर सकता है। सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन गियर बदलने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए डिजाइन किया जाता है। वहीं, डुअल क्लच सिस्टम

ट्रैक्टर के ट्रांसमिशन और पीटीओ संचालन से संबंधित कार्यों में उपयोगी हो सकता है। हालांकि, गियर बदलने और क्लच के सही इस्तेमाल के लिए निर्माता द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करना आवश्यक है। इस ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 0.48 से 30.0 किलोमीटर प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 0.41 से 22.95 किलोमीटर प्रति घंटा बताई गई है। गति की यह विस्तृत रेंज अलग-अलग कामों के लिए उपयुक्त गियर चुनने में सहायता कर सकती है। खेत में कम गति पर काम करना और सड़क पर ट्रैक्टर चलाना दोनों अलग परिस्थितियां हैं, इसलिए ऑपरेटर को काम के अनुसार सही गियर और सुरक्षित गति का चयन करना चाहिए।

## प्रीत 6049 NT 4WD के ब्रेक सिस्टम

प्रीत 6049 NT 4WD में मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं। इस प्रकार के ब्रेक सिस्टम में ब्रेक डिस्क तेल के संपर्क में रहती हैं, जिससे ब्रेकिंग सिस्टम के संचालन और घिसाव को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। खेतों में काम करते समय ट्रैक्टर को बार-बार रोकने, मोड़ने और कृषि उपकरणों के साथ चलाने की आवश्यकता होती है। ऐसे में अच्छी स्थिति में मौजूद ब्रेक सिस्टम सुरक्षित संचालन के लिए महत्वपूर्ण होता है।

## प्रीत 6049 NT 4WD का स्टीयरिंग सिस्टम

प्रीत 6049 NT 4WD में पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है। पावर स्टीयरिंग ट्रैक्टर को मोड़ने और उसकी दिशा नियंत्रित करने में लगने वाले शारीरिक प्रयास को कम करने में मदद करती है। खेत में जुताई, बुवाई और अन्य कृषि कार्यों के दौरान बार-बार दिशा बदलनी पड़ती है। ऐसे में पावर स्टीयरिंग ऑपरेटर के लिए ट्रैक्टर चलाना अधिक सुविधाजनक बना सकती है।

## प्रीत 6049 NT 4WD का पीटीओ सिस्टम

प्रीत 6049 NT 4WD में इंडिपेंडेंट पीटीओ और 6-स्प्लाइन शाफ्ट दिया गया है। इसमें 540 और 540E पीटीओ स्पीड का विकल्प मिलता है। पीटीओ यानी पावर टेक-ऑफ ट्रैक्टर के इंजन से प्राप्त शक्ति को विभिन्न कृषि उपकरणों तक पहुंचाने का काम करता है। इस सुविधा के माध्यम से उपयुक्त रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य पीटीओ चालित उपकरण चलाए जा सकते हैं। इस ट्रैक्टर की 52 HP पीटीओ पावर इसे उपयुक्त कृषि मशीनों के साथ काम करने के लिए उपयोगी बनाती है। किसान अपनी फसल और खेती की जरूरत के अनुसार उपकरणों का चयन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, रोटावेटर का इस्तेमाल मिट्टी तैयार करने के लिए किया जाता है, जबकि थ्रेशर की सहायता से फसल से अनाज अलग किया जाता है। हालांकि, प्रत्येक उपकरण के लिए अलग-अलग पावर और पीटीओ गति की आवश्यकता हो सकती है, इसलिए उपकरण के निर्माता की सिफारिशों के अनुसार ही संचालन करना चाहिए।

## प्रीत 6049 NT 4WD की फ्यूल टैंक क्षमता

प्रीत 6049 NT 4WD में 67 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। इस क्षमता के कारण किसान अपने काम की प्रकृति और डीजल की खपत के अनुसार ईंधन भरने की योजना बना सकते हैं। खेत में लगातार कई घंटे तक जुताई, बुवाई या अन्य कृषि कार्य करने के दौरान पर्याप्त ईंधन उपलब्ध होना सुविधाजनक हो सकता है।

## प्रीत 6049 NT 4WD के डायमेंशन और ग्राउंड क्लीयरेंस

प्रीत 6049 NT 4WD का व्हीलबेस 2216 मिलीमीटर, कुल लंबाई 4200 मिलीमीटर और चौड़ाई 1455 मिलीमीटर बताई गई है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 300 मिलीमीटर है। ट्रैक्टर के डायमेंशन खेत में उसके संचालन, मोड़ने के लिए आवश्यक जगह और कृषि उपकरणों के साथ काम करने की सुविधा को प्रभावित करते हैं। इसका 300 मिलीमीटर का ग्राउंड क्लीयरेंस खेत में मिट्टी की ऊंचाई, फसल अवशेषों और कुछ असमान सतहों के

ऊपर से गुजरने में उपयोगी हो सकता है। हालांकि, वास्तविक सुविधा खेत की स्थिति, टायरों के आकार और ट्रैक्टर के भार पर निर्भर करती है। किसानों को ऊंची मेड़, गहरी नालियों या असमान जमीन पर ट्रैक्टर चलाते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

## प्रीत 6049 NT 4WD की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता

प्रीत 6049 NT 4WD में 2400 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। यह क्षमता ट्रैक्टर को उपयुक्त कृषि उपकरणों को उठाने और नियंत्रित करने में मदद करती है। खेती में कल्टीवेटर, हल और अन्य तीन-बिंदु लिंकेज से जुड़े उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इन उपकरणों को सही तरीके से उठाने और उनकी स्थिति नियंत्रित करने के लिए हाइड्रोलिक सिस्टम महत्वपूर्ण होता है।

## प्रीत 6049 NT 4WD के टायर साइज

प्रीत 6049 NT 4WD में आगे के टायरों का साइज 9.5 x 24 और पीछे के टायरों का साइज 16.9 x 28 दिया गया है। ट्रैक्टर के टायर खेत में पकड़, ट्रैक्शन और भार वहन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चार पहिया ड्राइव ट्रैक्टर में आगे और पीछे के टायरों का सही साइज विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे चारों पहियों के बीच पावर के सही तालमेल पर असर पड़ सकता है।

## प्रीत 6049 NT 4WD ट्रैक्टर की कीमत?

प्रीत 6049 NT 4WD ट्रैक्टर की कीमत लगभग ₹7.89 लाख से ₹8.21 लाख तक बताई गई है। यह 60 HP श्रेणी में आने वाला 4WD ट्रैक्टर है, जिसे उन किसानों के लिए एक विकल्प के रूप में देखा जा सकता है, जिन्हें खेती के विभिन्न कार्यों के लिए अधिक क्षमता और बेहतर ट्रैक्शन वाले ट्रैक्टर की जरूरत होती है। हालांकि, ट्रैक्टर की वास्तविक कीमत राज्य, जिले, डीलरशिप, वेरिएंट और अन्य लागू शुल्कों के अनुसार अलग-अलग हो सकती है।

## प्रीत 6049 NT 4WD से कौन-कौन से कृषि कार्य किए जा सकते हैं?

प्रीत 6049 NT 4WD की 60 HP इंजन श्रेणी, 52 HP पीटीओ पावर और 2400 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता इसे कई प्रकार के कृषि कार्यों के लिए उपयोगी विकल्प बना सकती है। किसान उपयुक्त उपकरणों के साथ जुताई, कल्टीवेटर चलाने, रोटावेटर से खेत तैयार करने और अन्य कृषि गतिविधियों में इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। चार पहिया ड्राइव सिस्टम उन परिस्थितियों में उपयोगी हो सकता है, जहां खेत में बेहतर ट्रैक्शन की आवश्यकता होती है। पीटीओ की मदद से उपयुक्त थ्रेशर और अन्य कृषि मशीनों का संचालन भी किया जा सकता है। अलग-अलग पीटीओ गति के विकल्प उपकरण की आवश्यकता के अनुसार काम करने में सहायता कर सकते हैं। इसके अलावा, हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता उपयुक्त कृषि उपकरणों को उठाने और उनकी कार्य स्थिति नियंत्रित करने में मदद करती है। ट्रैक्टर का इस्तेमाल ढुलाई जैसे कामों में भी किया जा सकता है, लेकिन ट्रॉली का भार, सड़क की स्थिति, ब्रेकिंग क्षमता और लागू नियमों का ध्यान रखना आवश्यक है। प्रत्येक कृषि उपकरण के लिए जरूरी पावर अलग हो सकती है, इसलिए केवल ट्रैक्टर की HP श्रेणी देखकर उपकरण का चयन नहीं करना चाहिए। उपकरण की निर्धारित क्षमता और निर्माता की सिफारिशों के अनुसार काम करना अधिक सुरक्षित और उपयोगी रहता है।

## प्रीत 6049 NT 4WD के प्रमुख फीचर्स और फायदे

प्रीत 6049 NT 4WD के प्रमुख फीचर्स में 60 HP का इंजन, चार पहिया ड्राइव सिस्टम, 52 HP की पीटीओ पावर, सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन और पावर स्टीयरिंग शामिल हैं। ये सुविधाएं इसे अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए विचार करने योग्य बनाती हैं। इसकी 12 फॉरवर्ड और 12 रिवर्स गियर वाली व्यवस्था विभिन्न कामों के लिए उपयुक्त गति चुनने में

मदद करती है। मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक ट्रैक्टर को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी 2400 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता उपयुक्त कृषि उपकरणों के साथ काम करने में मदद कर सकती है। वहीं, 67 लीटर का फ्यूल टैंक लंबे कार्यों की योजना बनाने में उपयोगी हो सकता है। 540 और 540E पीटीओ विकल्पों के कारण किसान उपकरण की आवश्यकता के अनुसार पीटीओ संचालन का चयन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, 300 मिलीमीटर का ग्राउंड क्लीयरेंस खेत की कुछ असमान सतहों पर उपयोगी हो सकता है। हालांकि, किसी भी ट्रैक्टर की उपयोगिता केवल उसके फीचर्स से निर्धारित नहीं होती। खेत की मिट्टी, फसल का प्रकार, उपकरणों की आवश्यकता, ईंधन की खपत और सर्विसिंग की लागत को ध्यान में रखकर निर्णय लेना चाहिए। किसान को ट्रैक्टर खरीदने से पहले अपनी वास्तविक जरूरतों के आधार पर उसकी तुलना अन्य समान HP श्रेणी के ट्रैक्टरों से भी करनी चाहिए।

### प्रीत 6049 NT 4WD किस किसान के लिए उपयुक्त है?

प्रीत 6049 NT 4WD उन किसानों के लिए एक विकल्प हो सकता है, जिन्हें 60 HP श्रेणी में चार पहिया ड्राइव ट्रैक्टर की जरूरत है। जिन किसानों को खेत में जुताई, रोटावेटर, कल्टीवेटर और अन्य उपयुक्त कृषि उपकरणों के साथ काम करना होता है, वे इसकी इंजन क्षमता, पीटीओ पावर और हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता का लाभ उठा सकते हैं। विशेष रूप से ऐसी परिस्थितियों में, जहां बेहतर ट्रैक्शन की आवश्यकता होती है, 4WD सिस्टम उपयोगी हो सकता है। यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए भी विचार करने योग्य है, जो अलग-अलग कृषि उपकरणों के संचालन के लिए एक ही ट्रैक्टर का इस्तेमाल करना चाहते हैं। इसके 12 फॉरवर्ड और 12 रिवर्स गियर काम के अनुसार गति चुनने में सहायता कर सकते हैं। हालांकि, यदि खेती का क्षेत्र छोटा है या हल्के कृषि कार्य अधिक किए जाते हैं, तो किसान को 2WD और 4WD ट्रैक्टरों की कीमत तथा रखरखाव लागत की तुलना भी करनी चाहिए। ट्रैक्टर खरीदने का निर्णय लेते समय अपने खेत की मिट्टी, फसल चक्र, सालाना काम के घंटों, उपलब्ध कृषि उपकरणों और बजट का आकलन करना जरूरी है। इससे किसान अपनी जरूरतों के अनुसार सही ट्रैक्टर चुन सकते हैं।

# आयशर 557 4डब्ल्यूडी: 50 एचपी श्रेणी में सबसे दमदार ट्रैक्टर




### आयशर 557 4WD ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

भारत में खेती-किसानी के लिए एक ऐसे ट्रैक्टर की जरूरत होती है, जो खेतों में जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य कृषि कार्यों को आसानी से पूरा कर सके। आयशर ट्रैक्टर्स अपने मजबूत इंजन, उपयोगी फीचर्स और खेती के विभिन्न कार्यों के लिए जाने जाते हैं। आयशर 557 4WD ट्रैक्टर भी इसी श्रेणी का एक दमदार मॉडल है, जिसे 50 HP की इंजन श्रेणी में पेश किया गया है। यह ट्रैक्टर चार पहिया ड्राइव (4WD) सिस्टम के साथ आता है, जो अगर आप खेती के लिए 50 HP श्रेणी में 4WD ट्रैक्टर

खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आइए आयशर 557 4WD की कीमत, इंजन, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानते हैं।

## आयशर 557 4WD का इंजन और पावर

आयशर 557 4WD ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर वाला 3300 CC इंजन दिया गया है, जो 50 HP की पावर श्रेणी में आता है। यह इंजन खेती के नियमित और अपेक्षाकृत भारी कार्यों के लिए उपयोगी क्षमता प्रदान करता है। ट्रैक्टर के इंजन की क्षमता का सीधा संबंध खेत में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों, काम की गति और मिट्टी की स्थिति से होता है। उचित गियर और इंजन गति का चयन करके किसान जुताई, बुवाई और अन्य कृषि कार्यों को अपनी जरूरत के अनुसार कर सकते हैं। इस ट्रैक्टर में वाटर-कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जो इंजन के तापमान को नियंत्रित रखने में मदद करता है। लंबे समय तक खेत में काम करने के दौरान इंजन का तापमान नियंत्रित रहना महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे ट्रैक्टर की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता बनाए रखने में मदद मिलती है। इसके अलावा, आयशर 557 4WD में 42.5 HP की पीटीओ पावर मिलती है, जो पीटीओ से चलने वाले कृषि उपकरणों के संचालन के लिए महत्वपूर्ण है। रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य पीटीओ चालित उपकरणों का चुनाव करते समय उनकी पावर आवश्यकता और निर्माता की सिफारिशों को ध्यान में रखना चाहिए।

## आयशर 557 4WD का ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स

आयशर 557 4WD में डुअल क्लच और साइड शिफ्ट पार्शियल सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर मिलते हैं, जो अलग-अलग कृषि कार्यों के लिए गति का चयन करने में मदद करते हैं। जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाने और ट्रॉली से ढुलाई जैसे कामों में अलग-अलग गति की आवश्यकता होती है। ऐसे में गियरबॉक्स का सही इस्तेमाल ट्रैक्टर के प्रदर्शन को बेहतर बनाने और काम को व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद कर सकता है।

ट्रैक्टर में 12 V और 88 AH की बैटरी दी गई है। बैटरी ट्रैक्टर के इलेक्ट्रिकल सिस्टम और स्टार्टिंग व्यवस्था के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बेहतर प्रदर्शन के लिए बैटरी के टर्मिनल, चार्जिंग सिस्टम और वायरिंग की नियमित जांच करना आवश्यक है। सही गियर का चयन और ट्रांसमिशन का उचित रखरखाव ट्रैक्टर की कार्यक्षमता बनाए रखने में मदद कर सकता है।

## आयशर 557 4WD के ब्रेक सिस्टम

आयशर 557 4WD में मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं। इस प्रकार के ब्रेक सिस्टम में ब्रेकिंग से संबंधित डिस्क तेल के संपर्क में रहती हैं, जिससे ब्रेकिंग सिस्टम के संचालन और घिसाव को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। खेतों में काम करते समय ट्रैक्टर को बार-बार रोकने, मोड़ने और कृषि उपकरणों के साथ चलाने की जरूरत होती है। ऐसे में प्रभावी ब्रेकिंग सिस्टम ऑपरेटर की सुविधा और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

## आयशर 557 4WD का स्टीयरिंग सिस्टम

इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है, जो ट्रैक्टर को मोड़ने और दिशा नियंत्रित करने में मदद करती है। खेती के दौरान खेत के किनारों पर मुड़ना, एक कतार से दूसरी कतार में जाना और कृषि उपकरणों के साथ ट्रैक्टर को नियंत्रित करना नियमित कार्य हैं। पावर स्टीयरिंग की मदद से इन कार्यों के दौरान स्टीयरिंग चलाने में लगने वाला शारीरिक प्रयास कम हो सकता है, जिससे ऑपरेटर को सुविधा मिलती है।

## आयशर 557 4WD का पीटीओ और कृषि उपकरणों में उपयोग

आयशर 557 4WD में लाइव पीटीओ के साथ सिक्स-स्प्लाइन्ड शाफ्ट दिया गया है। इसकी पीटीओ गति 1944 इंजन आरपीएम पर 540 आरपीएम

और 1788 इंजन आरपीएम पर 540 आरपीएम बताई गई है। पीटीओ यानी पावर टेक-ऑफ ट्रैक्टर की इंजन पावर को विभिन्न कृषि उपकरणों तक पहुंचाने का काम करता है। इसके माध्यम से रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य उपयुक्त पीटीओ चालित उपकरणों का संचालन किया जा सकता है। इस ट्रैक्टर की 42.5 HP पीटीओ पावर कृषि उपकरणों के चुनाव में एक महत्वपूर्ण पहलू है। किसान अपने खेत की जरूरत और फसल के प्रकार के अनुसार उपकरणों का चयन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, रोटावेटर का उपयोग खेत की मिट्टी तैयार करने में किया जाता है, जबकि थ्रेशर का इस्तेमाल फसल से अनाज अलग करने के लिए किया जा सकता है। हालांकि, प्रत्येक उपकरण की पावर आवश्यकता अलग होती है, इसलिए ट्रैक्टर की क्षमता के अनुसार उपकरण का चयन करना जरूरी है।

## आयशर 557 4WD की फ्यूल टैंक क्षमता

आयशर 557 4WD में 48 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है। बड़े फ्यूल टैंक का लाभ यह है कि काम की परिस्थितियों और डीजल की खपत के अनुसार ट्रैक्टर को बार-बार ईंधन भरने के लिए रोकने की जरूरत कम हो सकती है। खेत में जुताई, बुवाई या अन्य कार्य करते समय लगातार काम करना कई किसानों के लिए महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में 48 लीटर का फ्यूल टैंक दैनिक कृषि कार्यों की योजना बनाने में मदद कर सकता है।

## आयशर 557 4WD के डायमेंशन और वजन

आयशर 557 4WD का वजन 3380 किलोग्राम है। इसका व्हीलबेस 2075 मिलीमीटर, कुल लंबाई 3800 मिलीमीटर और चौड़ाई 1910 मिलीमीटर है। ट्रैक्टर के वजन और डायमेंशन का उसके संतुलन, खेत में संचालन और उपकरणों के साथ काम करने पर प्रभाव पड़ता है। चार पहिया ड्राइव सिस्टम के साथ यह ट्रैक्टर उन परिस्थितियों में उपयोगी हो सकता है, जहां बेहतर ट्रैक्शन और स्थिरता की जरूरत होती है।

## आयशर 557 4WD की हाइड्रोलिक और लिफ्टिंग क्षमता

आयशर 557 4WD में 2100 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। यह क्षमता ट्रैक्टर को उपयुक्त कृषि उपकरणों को उठाने और नियंत्रित करने में मदद करती है। खेती में हल, कल्टीवेटर और अन्य तीन-बिंदु लिंकेज से जुड़े उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इन उपकरणों के सही संचालन के लिए हाइड्रोलिक सिस्टम की क्षमता महत्वपूर्ण होती है। 2100 किलोग्राम की बताई गई लिफ्टिंग क्षमता इस ट्रैक्टर को विभिन्न कृषि उपकरणों के साथ उपयोग करने के लिए उपयुक्त विकल्प बना सकती है।

## आयशर 557 4WD के टायर साइज

आयशर 557 4WD में आगे के टायरों का साइज 9.50 x 24 और पीछे के टायरों का साइज 16.9 x 28 दिया गया है। ट्रैक्टर के टायर खेत में पकड़, ट्रैक्शन और भार वहन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से 4WD ट्रैक्टर में आगे और पीछे के टायरों का सही आकार तथा उनका उचित अनुपात महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे चारों पहियों के बीच पावर के सही वितरण पर प्रभाव पड़ता है।

## आयशर 557 4WD से कौन-कौन से कृषि कार्य किए जा सकते हैं?

आयशर 557 4WD की 50 HP इंजन श्रेणी, 42.5 HP पीटीओ पावर और 2100 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता इसे कई प्रकार के कृषि कार्यों के लिए उपयोगी बना सकती है। खेत की मिट्टी और उपकरण की जरूरत के अनुसार इसका उपयोग जुताई, कल्टीवेटर चलाने, रोटावेटर से खेत तैयार करने, बुवाई से जुड़े कार्यों और अन्य उपयुक्त कृषि गतिविधियों में किया जा सकता है। 4WD सिस्टम उन खेतों में विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है,

जहां सामान्य परिस्थितियों की तुलना में अधिक ट्रैक्शन की जरूरत होती है। इसके अलावा, उपयुक्त कृषि उपकरणों के साथ फसल प्रबंधन और कटाई के बाद के कुछ कार्य भी किए जा सकते हैं। पीटीओ चालित उपकरणों के इस्तेमाल से किसान अलग-अलग कामों के लिए ट्रैक्टर की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं। हालांकि, प्रत्येक उपकरण के लिए आवश्यक पावर, कार्य की गहराई और खेत की परिस्थितियों का ध्यान रखना जरूरी है। सही उपकरण चुनने से ट्रैक्टर की क्षमता का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। ढुलाई के लिए भी किसान ट्रैक्टर का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन ट्रॉली का भार, सड़क की स्थिति, ब्रेकिंग क्षमता और स्थानीय नियमों का पालन आवश्यक है। ट्रैक्टर की अधिकतम गति के आधार पर हर परिस्थिति में सुरक्षित गति निर्धारित नहीं की जा सकती। इसलिए ढुलाई के दौरान सावधानी और निर्माता के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

### आयशर 557 4WD ट्रैक्टर की कीमत?

आयशर 557 4WD ट्रैक्टर की कीमत भारतीय बाजार में लगभग ₹8.92 लाख से ₹9.28 लाख तक बताई गई है। इस कीमत श्रेणी में यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए एक विकल्प हो सकता है, जिन्हें 50 HP क्षमता वाला चार पहिया ड्राइव ट्रैक्टर चाहिए। हालांकि, ट्रैक्टर की वास्तविक ऑन-रोड कीमत राज्य, जिले, डीलर, आरटीओ शुल्क, बीमा और अन्य लागू शुल्कों के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इसलिए खरीदारी से पहले अपने नजदीकी अधिकृत आयशर डीलर से नवीनतम कीमत और उपलब्ध ऑफर्स की जानकारी जरूर प्राप्त करनी चाहिए।

### आयशर 557 4WD किस किसान के लिए उपयुक्त है?

आयशर 557 4WD उन किसानों के लिए विचार करने योग्य ट्रैक्टर है, जिन्हें 50 HP श्रेणी में चार पहिया ड्राइव की सुविधा चाहिए। जिन किसानों को जुताई, रोटावेटर, कल्टीवेटर और अन्य उपयुक्त कृषि उपकरणों के साथ काम करना होता है, वे इसकी इंजन पावर, पीटीओ क्षमता और हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता के आधार पर अपनी जरूरतों का आकलन कर सकते हैं। 4WD सिस्टम विशेष रूप से ऐसी परिस्थितियों में उपयोगी हो सकता है, जहां बेहतर पकड़ की आवश्यकता होती है। यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए भी एक विकल्प हो सकता है, जो खेती के अलग-अलग कामों के लिए एक ही ट्रैक्टर का इस्तेमाल करना चाहते हैं। हालांकि, यदि खेत का आकार छोटा है, कृषि कार्य हल्के हैं या 4WD की जरूरत कम पड़ती है, तो किसान को 2WD और 4WD ट्रैक्टरों की कीमत, ईंधन खर्च और रखरखाव की तुलना भी करनी चाहिए। सही ट्रैक्टर का चुनाव खेती की जरूरतों और कुल परिचालन लागत के आधार पर करना अधिक फायदेमंद रहता है।

# भारत के टॉप 5 हैरो - जानें, कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स




### जानें, भारत के टॉप 5 हैरो की पूरी जानकारी

खेती में बेहतर उत्पादन के लिए खेत की सही तैयारी बेहद जरूरी मानी जाती है। मिट्टी को भुरभुरा बनाना, खरपतवार हटाना, खेत को समतल करना और

बुवाई के लिए उपयुक्त सीडबेड तैयार करना ऐसे काम हैं, जिनमें हैरो (Harrow) महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक कृषि में हैरो का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, क्योंकि यह कम समय में अधिक क्षेत्र की जुताई करने में मदद करता है। भारत में कई कंपनियां अलग-अलग जरूरतों के अनुसार मजबूत और आधुनिक हैरो तैयार कर रही हैं, जो छोटे से लेकर बड़े किसानों तक के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। अलग-अलग HP क्षमता, डिस्क डिजाइन और उन्नत तकनीक के कारण किसान अपनी खेती और मिट्टी के अनुसार सही हैरो का चयन कर सकते हैं।

## सोनालिका हैरो: मजबूत डिजाइन और बेहतरीन जुताई का भरोसेमंद विकल्प

सोनालिका का हैरो किसानों के बीच अपनी मजबूत बनावट और प्रभावी कार्यक्षमता के लिए काफी लोकप्रिय माना जाता है। यह उपकरण खेत की मिट्टी को भुरभुरा बनाने और समतल करने में अहम भूमिका निभाता है। सोनालिका हैरो 30 HP से लेकर 100 HP तक के ट्रैक्टरों के साथ आसानी से काम कर सकता है, जिससे यह छोटे और बड़े दोनों प्रकार के किसानों के लिए उपयुक्त बन जाता है। कंपनी ने इसे 12 से 24 डिस्क तक के कई मॉडल्स में उपलब्ध कराया है, ताकि किसान अपनी जरूरत और खेत के आकार के अनुसार सही मॉडल चुन सकें।

इस हैरो में आगे की तरफ नॉच्ड डिस्क और पीछे की तरफ प्लेन डिस्क का संयोजन दिया गया है। यह डिजाइन मिट्टी को काटने, पलटने और ढेलों को तोड़ने में काफी मददगार साबित होता है। सूखी और कठोर जमीन में भी यह मशीन प्रभावी तरीके से काम करती है। बुवाई से पहले खेत तैयार करने, खरपतवार हटाने और मिट्टी को नरम बनाने जैसे कार्यों में इसका उपयोग काफी फायदेमंद माना जाता है। SLMDH-12, SLMDH-14, SLMDH-16, SLMDH-19, SLMDH-20, SLMDH-22 और SLMDH-24 इसके प्रमुख मॉडल्स हैं, जो किसानों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करते हैं।

## शक्तिमान पावर हैरो: एडवांस तकनीक के साथ गहरी जुताई की क्षमता

शक्तिमान का पावर हैरो आधुनिक खेती के लिए एक उन्नत कृषि उपकरण माना जाता है। यह मशीन मिट्टी को गहराई तक तोड़ने और बेहतरीन सीडबेड तैयार करने के लिए जानी जाती है। 35 HP से 115 HP तक के ट्रैक्टरों के साथ काम करने वाला यह हैरो खासतौर पर आलू, प्याज और अन्य बागवानी फसलों के लिए काफी उपयोगी माना जाता है। इसकी गहरी जुताई क्षमता लगभग 11 इंच तक होती है, जिससे कठोर मिट्टी भी आसानी से नरम हो जाती है। इस मशीन की सबसे खास बात इसके वर्टिकल ब्लेड हैं, जो मिट्टी को बिना पलटे ही उसे भुरभुरा बना देते हैं। इससे मिट्टी की नमी लंबे समय तक बनी रहती है और बीज अंकुरण के लिए बेहतर वातावरण तैयार होता है। शक्तिमान पावर हैरो में बोरॉन स्टील से बने मजबूत ब्लेड दिए जाते हैं, जो लंबे समय तक चलते हैं और कम घिसते हैं। यह मशीन जुताई, मिट्टी तोड़ने और समतलीकरण जैसे कई कार्य एक साथ कर सकती है, जिससे समय और ईंधन दोनों की बचत होती है। रेगुलर, H-160 और E-120 इसके लोकप्रिय मॉडल्स माने जाते हैं।

## फील्डकिंग हैरो: मजबूत डिस्क और कम रखरखाव वाला कृषि उपकरण

फील्डकिंग का हैरो भारतीय किसानों के बीच अपनी मजबूती और टिकाऊ प्रदर्शन के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह मशीन मिट्टी की जुताई, कंकड़-पत्थर हटाने और बेहतर सीडबेड तैयार करने में प्रभावी मानी जाती है। 30 HP से 100 HP तक के ट्रैक्टरों के लिए उपयुक्त यह हैरो 14 से 20 डिस्क वाले कई मॉडल्स में उपलब्ध है। फील्डकिंग हैरो में बोरॉन स्टील डिस्क का उपयोग किया जाता है, जिससे इसकी मजबूती और कार्यक्षमता बढ़ जाती है। यह कठिन और पथरीली जमीन में भी आसानी से काम कर सकता है। इसके जरिए किसान खेत से खरपतवार को जड़ से खत्म कर सकते हैं और मिट्टी

में नमी बनाए रखने में भी मदद मिलती है। इसके यूपी मॉडल, टेंडेम डिस्क हैरो और दबंग हैरो जैसे मॉडल किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इसके स्पेयर पार्ट्स भी आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, जिससे रखरखाव में ज्यादा परेशानी नहीं होती।

### महिंद्रा हैरो: प्राथमिक जुताई के लिए दमदार विकल्प

महिंद्रा का हैरो अपनी मजबूत फ्रेम और शानदार जुताई क्षमता के कारण किसानों के बीच भरोसेमंद माना जाता है। यह विशेष रूप से 35 HP से 55 HP ट्रैक्टरों के लिए डिजाइन किया गया है और मिट्टी को भुरभुरा बनाने, फसल अवशेषों को काटने तथा खरपतवार हटाने में काफी मददगार साबित होता है। महिंद्रा हैरो में मजबूत नॉच्ड डिस्क दिए गए हैं, जो मिट्टी में गहराई तक प्रवेश कर उसे अच्छी तरह तोड़ते हैं। इसकी एडजस्टेबल डिस्क सुविधा किसानों को अलग-अलग मिट्टी के अनुसार मशीन की सेटिंग बदलने की सुविधा देती है। इसमें लगे स्क्रैपर डिस्क पर चिपकी मिट्टी को स्वत: साफ करते रहते हैं, जिससे मशीन की कार्यक्षमता बनी रहती है। यह उपकरण प्राथमिक जुताई के लिए काफी उपयुक्त माना जाता है और सामान्य कल्टीवेटर की तुलना में बेहतर परिणाम देता है।

### फार्मकिंग हैरो: भारी मिट्टी और कठिन खेती कार्यों के लिए मजबूत मशीन

फार्मकिंग अपने मजबूत और टिकाऊ कृषि उपकरणों के लिए किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। कंपनी की कॉम्पैक्ट डिस्क हैरो सीरीज में FK-CDH16, FK-CDH18, FK-CDH20, FK-CDH22 और FK-CDH24 जैसे मॉडल शामिल हैं, जिन्हें कठिन मिट्टी और भारी कृषि कार्यों के लिए तैयार किया गया है। इन सभी मॉडलों में 100×100 मिमी का मजबूत स्क्वायर ट्यूबुलर फ्रेम दिया गया है, जो मशीन को अधिक टिकाऊ और स्थिर बनाता है।

इसके अलावा 32 मिमी का सॉलिड स्क्वायर रॉड गैंग बोल्ट और मजबूत एक्सल मशीन को बेहतर संतुलन प्रदान करते हैं। फ्रंट गैंग में नॉच्ड डिस्क और रियर गैंग में प्लेन डिस्क का संयोजन मिट्टी की प्रभावी कटाई और समतलीकरण में मदद करता है। अलग-अलग डिस्क संख्या और कटिंग चौड़ाई के कारण किसान अपनी खेती और जमीन के अनुसार उपयुक्त मॉडल चुन सकते हैं। भारी वजन और मजबूत बेयरिंग हब की वजह से यह डिस्क हैरो कम समय में बड़े क्षेत्र की प्रभावी जुताई करने में सक्षम माना जाता है।

# भारतीय कृषि का नया दौर: परंपराओं के साथ तकनीकी प्रगति की यात्रा




भारत की कृषि परंपरा न केवल हमारी अर्थव्यवस्था की बुनियाद है, बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की आत्मा भी रही है। आज जब जलवायु संकट, जनसंख्या वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों की घटती उपलब्धता जैसे विषय सामने हैं, तब कृषि जगत में परिवर्तन और नवाचार की लहर तेज़ी से फैल रही है।

### तकनीकी क्रांति से बदलती खेतों की

## पहचान

अब किसान केवल पारंपरिक औज़ारों तक सीमित नहीं हैं। वे आधुनिक उपकरणों, स्मार्टफोन, ड्रोन और सैटेलाइट जैसी तकनीकों का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर रहे हैं। स्मार्ट खेती (Precision Farming) से जल, उर्वरक और कीटनाशकों का मापित उपयोग संभव हुआ है, जिससे उत्पादन लागत कम और पैदावार अधिक हो रही है। देश के एग्रीटेक स्टार्टअप्स किसानों को डिजिटल सहायता देकर फसल सलाह, बाज़ार भाव और बिक्री के मंच उपलब्ध करवा रहे हैं।

## जैविक खेती की ओर जागरूकता

आज का उपभोक्ता स्वास्थ्य के प्रति सजग है, और इसी के चलते जैविक खेती का विस्तार हो रहा है। सिक्किम भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य बन चुका है, और उत्तराखंड, केरल व मध्यप्रदेश जैसे अन्य राज्य भी इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। जैविक उत्पादों की मांग घरेलू और वैश्विक दोनों बाज़ारों में लगातार बढ़ रही है।

## जलवायु संकट में टिकाऊ समाधान

बदलते पर्यावरण ने किसानों को नई रणनीतियों को अपनाने पर मजबूर किया है। कम पानी में उगने वाले मोटे अनाज (मिलेट्स) जैसे विकल्पों को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके साथ ही ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और मृदा परीक्षण कार्ड जैसी सरकारी योजनाएं स्थायी कृषि को बढ़ावा दे रही हैं।

## युवाओं और महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

अब खेती सिर्फ बुज़ुर्गों का काम नहीं रहा। गाँवों की महिलाएं और युवा वर्ग खेती को एक उद्यम के रूप में देख रहे हैं। किसान उत्पादक संगठन (FPOs) के ज़रिए महिलाएं सामूहिक खेती कर रही हैं और जैविक उत्पादों को ऑनलाइन बेच रही हैं। युवा वर्ग नई तकनीकों के साथ कृषि व्यवसाय में अपनी पहचान बना रहा है।

## भविष्य की ओर एक दृढ़ कदम

आज भारतीय कृषि एक ऐसे मोड़ पर है जहाँ परंपरा और नवाचार मिलकर नई राह बना रहे हैं। आत्मनिर्भर और पर्यावरण-संवेदनशील खेती की ओर बढ़ते इस सफर में तकनीकी संसाधनों, बाज़ार तक पहुंच और किसान प्रशिक्षण की अहम भूमिका होगी। यही भविष्य की हरित क्रांति का आधार बनेगा।

# स्पासमोविन वेट बोलस: एक भरोसेमंद पेट दर्द निवारक पशु औषधि




**स्पा**समोविन वेट बोलस एक प्रभावशाली पशु चिकित्सा दवा है जिसका उपयोग मुख्य रूप से पशुओं में पेट दर्द और ऐंठन जैसी समस्याओं से राहत दिलाने के लिए किया जाता है। यह विशेष रूप से उन स्थितियों में उपयोगी होती है जब पशु को अचानक मरोड़, कब्ज, अफारा या गर्भाशय संकुचन जैसी तकलीफें हो रही हों।

### प्रमुख उपयोग:

- जब घोड़े, गाय या भैंस जैसे बड़े पशुओं को पेट में दर्द (कोलिक) की शिकायत हो।


Global
4WD
Expert
Solis
IN COLLABORATION WITH
YANMAR
INTRODUCING THE
ALL-NEW SOLIS S90
THE SUPREME POWER OF
ADVANCED JAPANESE TECHNOLOGY
POWERPACK PERFORMER
WITH 12F+12R SPEEDS
NEW S-TECH ENGINE
WITH 90HP HIGH POWER
S-BOOST HYDRAULICS
WITH UPTO 3500KG LIFT CAPACITY
AC CABIN
WITH WIDE & OPEN PLATFORM
90HP

- गाय, भैंस, बकरी आदि जुगाली करने वाले पशुओं में गैस या कब्ज से पेट में दर्द हो।
- पेशाब की नली में रुकावट या मरोड़ से उत्पन्न दर्द को कम करने में सहायक।
- मांसपेशियों में अचानक हुए संकुचन या ऐंठन से होने वाले तीव्र दर्द में राहत देती है।
- पेट और आंतों में अल्सर से उत्पन्न दर्द में उपयोगी।
- गर्भवती पशुओं में जब गर्भाशय के संकुचन तेज हो जाएं और दर्द होने लगे।

**खुराक:**

- बड़े पशुओं के लिए: 2 बोलस दिन में दो बार।
- छोटे पशुओं के लिए: 1 बोलस दिन में दो बार।

(नोट: खुराक पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार दी जानी चाहिए।)

उपलब्धता:

- एक स्ट्रिप में 4 बोलस होते हैं।
- एक डिब्बे में 15 स्ट्रिप, अर्थात कुल 60 बोलस होते हैं।

**विशेषताएँ और लाभ:**

स्पासमोविन वेट बोलस तेज़ असरदार औषधि है जो हरे चारे या अधिक चारा खाने से उत्पन्न गैस, अफारा और कब्ज जैसी समस्याओं में तुरंत आराम दिलाती है। इसके सेवन से पशु का मूड सामान्य होता है, वह दुग्ध उत्पादन में लौटता है और उसकी भूख भी सामान्य होती है।

यह दवा किसान और पशुपालकों के बीच अत्यधिक विश्वसनीय मानी जाती है क्योंकि इसका असर जल्दी दिखता है और यह पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करती है।

# हाइड्रोपोनिक चारा विधि से बना सकते है पशुओं के लिए चारा



पशुओं से अधिक दूध का उत्पादन प्राप्त करने लिए हरा चारा आवश्यक है, लेकिन जमीन और पानी की कमी के कारण चारा पुरे वर्ष उपलब्ध नहीं होता है। पूरे वर्ष भर आवश्यक हरे चारे का उत्पादन करना मुश्किल हो जाता है। साथ ही, अच्छे चारे की कमी पशुधन उत्पादन और प्रजनन में बाधा डालती है। हाइड्रोपोनिक चारा मिट्टी के बिना और बेहद कम पानी की मदद से उगाया जाता है। लगभग 6-7 दिनों में बीज अंकुरित होकर 30-35 सेमी तक लंबे हो जाते हैं और पशुओं के लिए पोषक और ताजगी से भरपूर चारा प्रदान करते हैं। इस लेख में हम आपको आसान चरणों में हाइड्रोपोनिक चारा कैसे उगाए उसके बारे में जानकारी देंगे।

## हाइड्रोपोनिक चारे के फायदे (Advantages of Hydroponic Fodder)

**1. पोषण मूल्य (Nutrient Value)**

हाइड्रोपोनिक चारे में पारंपरिक सूखे चारे या अनाज की तुलना में अधिक पोषण होता है। यह विटामिन,

खनिज और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होता है।

### 2. त्वरित वृद्धि (Quick Growth)
जहां पारंपरिक चारा तैयार होने में दो महीने तक लगते हैं, वहीं हाइड्रोपोनिक चारा सिर्फ एक सप्ताह में तैयार हो जाता है।

### 3. कम जल की खपत (Low Water Requirement)
इसे उगाने में पारंपरिक चारे की तुलना में बहुत कम पानी लगता है। मात्र 3-4 लीटर पानी में 1 किलो हाइड्रोपोनिक चारा उगाया जा सकता है, जबकि पारंपरिक विधि में 70-100 लीटर पानी की जरूरत होती है।

### 4. नियमित उत्पादन (Year-round Production)
कम पानी के बावजूद इसे सालभर उगाया जा सकता है।

### 5. बिना रसायन के (Chemical-free)
हाइड्रोपोनिक चारा उगाने में किसी प्रकार के रसायन या कीटनाशक की जरूरत नहीं होती।

### 6. कम मजदूरी और परिवहन खर्च (Low Labor and Transport Cost)
इसे पशु शेड के पास ही उगाया जा सकता है, जिससे लेबर और परिवहन की लागत घटती है।

## हाइड्रोपोनिक चारा प्रणाली की संरचना (System Construction)
चारे की अच्छी पैदावार के लिए 15-32°C तापमान और 80-85% आर्द्रता आवश्यक होती है। इसके लिए एक साधारण शेडनेट या कम लागत वाला ग्रीनहाउस पर्याप्त होता है। इसे बनाने के लिए आप बांस, लोहे या प्लास्टिक की पाइपें और शेडनेट या बोरी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

### आकार: 10x10 फीट का शेड काफी है

- ट्रे: 1.5x3 फीट की मजबूत प्लास्टिक ट्रे इस्तेमाल करें
- रैक: 3-4 परतों वाला रैक बनाएं, पर ऊंचाई बहुत अधिक न हो
- जल निकासी: अतिरिक्त पानी निकलने के लिए ट्रे में छेद और नीचे ड्रेनेज लाइन जरूरी है

## हाइड्रोपोनिक चारा उगाने की प्रक्रिया (Production Process)

- बीज चयन: अच्छे गुणवत्ता वाले मक्का, गेहूं या चने के बीज लें। बाजरा और ज्वार के बीज न लें, क्योंकि इनमें विषाक्तता होती है।
- भिगोना: बीजों को गुनगुने पानी में 12 घंटे भिगोएं, नमक मिलाकर फफूंदी से बचाव करें
- अंकुरण: भिगोने के बाद बोरी में रखकर 24 घंटे तक अंकुरित करें
- ट्रे में फैलाना: अंकुरित बीजों को ट्रे में फैला दें और रैक में रखें
- सिंचाई: गर्मी में हर 2 घंटे और ठंड में 4 घंटे के अंतराल पर हल्का पानी छिड़कें
- सफाई: फंगस से बचने के लिए शेड की सफाई का विशेष ध्यान रखें

1 किलो मक्का बीज से 7 दिनों में 8 किलो तक हरा चारा प्राप्त हो सकता है। जैसे यदि रोज 5 ट्रे की आवश्यकता हो, तो कुल 35 ट्रे की व्यवस्था करनी होगी।

## हाइड्रोपोनिक चारा खिलाने का तरीका (Feeding)

- 6-7 दिनों में चारा तैयार हो जाता है। इसे ट्रे से निकालकर छोटे टुकड़ों में काटें और पशुओं को परोसें।

- 9 दिनों से ज्यादा चारा ट्रे में न रखें, क्योंकि इसके बाद इसकी पौष्टिकता घटने लगती है।
- इस चारे को अन्य चारे या सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाना बेहतर होता है।

### निष्कर्ष (Conclusion)

सतत और लाभकारी डेयरी पालन के लिए हाइड्रोपोनिक चारा एक बेहतरीन विकल्प है। यह न केवल जल्दी उगता है, बल्कि पोषक तत्वों से भरपूर होता है और पशुओं को भी बहुत पसंद आता है।

यदि आप पशुओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाला हरा चारा चाहते हैं, तो हाइड्रोपोनिक चारे की विधि जरूर अपनाएं – यह कम संसाधनों में बेहतर परिणाम देती है।

# सरकार ने डेयरी किसानों को दिया दिवाली का तोहफा: दूध पर अब ₹6 प्रति लीटर मिलेगा बोनस




### हिमाचल सरकार का डेयरी किसानों को बड़ा तोहफा, दूध पर ₹6 लीटर इंसेंटिव

हिमाचल प्रदेश के डेयरी किसानों और पशुपालकों के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। राज्य सरकार ने दुग्ध उत्पादकों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने और पशुपालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दुग्ध प्रोत्साहन योजना के तहत मिलने वाली राशि को दोगुना करने का फैसला किया है। अब पात्र किसानों को दूध की आपूर्ति पर प्रति लीटर 6 रुपये का प्रोत्साहन मिलेगा, जबकि पहले यह राशि 3 रुपये थी। सरकार के इस निर्णय से दूध उत्पादन से जुड़े किसानों को अतिरिक्त आर्थिक सहायता मिलने की उम्मीद है। इसके साथ ही प्राकृतिक आपदा में पशुधन, फसल और कृषि भूमि को नुकसान पहुंचने पर भी सहायता देने का प्रावधान किया गया है।

### सुक्खू सरकार ने लिये किसान हित में अहम निर्णय

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में किसानों, पशुपालकों और बागवानों के हित में कई अहम फैसलों को मंजूरी दी गई। इन निर्णयों में दूध पर प्रोत्साहन राशि बढ़ाने के अलावा कृषि परियोजनाओं का विस्तार, आपदा प्रभावित परिवारों के लिए राहत पैकेज और संबंधित विभागों में रिक्त पद भरने की मंजूरी भी शामिल है।

### दूध बेचने वाले किसानों को मिलेगा दोगुना प्रोत्साहन

हिमाचल प्रदेश में दुग्ध उत्पादन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बड़ी संख्या में परिवार खेती के साथ पशुपालन करके अपनी आजीविका चलाते हैं। ऐसे में दूध पर मिलने वाली प्रोत्साहन राशि में बढ़ोतरी किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी का जरिया बन सकती है। राज्य सरकार ने दुग्ध प्रोत्साहन योजना के तहत सहायता राशि 3 रुपये से बढ़ाकर 6 रुपये प्रति लीटर करने का निर्णय लिया है। इससे पात्र दूध उत्पादकों को पहले के मुकाबले दोगुना प्रोत्साहन मिलेगा। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी पात्र किसान की 100 लीटर

दध की आपूर्ति पर योजना के नियमों के अनुसार प्रोत्साहन की गणना की जाती है, तो राशि 300 रुपये के बजाय 600 रुपये होगी। सरकार ने सरकारी विभागों को अपनी जरूरत के दूध और दुग्ध उत्पाद मिल्कफेड से खरीदने के निर्देश देने का निर्णय भी लिया है। इस कदम का उद्देश्य स्थानीय दुग्ध उत्पादों की मांग बढ़ाना और किसानों के लिए बाजार को मजबूत करना है। इससे राज्य के दुग्ध सहकारी तंत्र को भी लाभ मिलने की संभावना है।

## आपदा में पशुधन का नुकसान होने पर मिलेगा मुआवजा

पहाड़ी क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं के कारण किसानों को कई बार भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। भूस्खलन, बाढ़ और अन्य आपदाओं से न केवल मकानों और खेतों को नुकसान पहुंचता है, बल्कि पशुधन की हानि भी परिवारों की आजीविका को प्रभावित करती है। इसी को ध्यान में रखते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार ने आपदा प्रभावित किसानों के लिए पशुधन और कृषि नुकसान पर सहायता निर्धारित की है। घोषित प्रावधानों के अनुसार, भैंस की मौत होने पर 55,000 रुपये और बकरी या भेड़ के नुकसान पर 15,000 रुपये का मुआवजा दिया जाएगा।

## फसल नुकसान और कृषि भूमि को क्षति पर आर्थिक सहायता

इसके अतिरिक्त फसल नुकसान के लिए 2,000 रुपये प्रति कनाल और कृषि भूमि को क्षति पहुंचने पर 5,000 रुपये की सहायता का प्रावधान किया गया है। इन उपायों का उद्देश्य आपदा से प्रभावित परिवारों को शुरुआती आर्थिक सहारा देना और उन्हें दोबारा खेती तथा पशुपालन शुरू करने में मदद पहुंचाना है। हालांकि, सहायता प्राप्त करने के लिए संबंधित सरकारी नियमों और पात्रता शर्तों का पालन करना होगा।

## बोह घाटी के प्रभावित परिवारों के लिए विशेष राहत पैकेज

कांगड़ा जिले की बोह घाटी में आपदा से प्रभावित परिवारों को राहत देने के लिए विशेष पैकेज को मंजूरी दी गई है। इसके तहत पूरी तरह क्षतिग्रस्त मकानों वाले परिवारों को 7.50 लाख रुपये की सहायता देने का प्रावधान है। घरेलू सामान के नुकसान पर एक लाख रुपये की मदद भी निर्धारित की गई है। प्रभावित परिवारों को किराये के लिए 5,000 रुपये की सहायता और छह महीने तक मुफ्त राशन उपलब्ध कराने का भी प्रावधान किया गया है। इस पैकेज का उद्देश्य प्रभावित लोगों को सुरक्षित आवास, भोजन और जरूरी घरेलू जरूरतों के लिए आर्थिक सहारा देना है।

## कृषि परियोजना के विस्तार के लिए ₹603 करोड़ मंजूर

हिमाचल प्रदेश में खेती और बागवानी को मजबूत बनाने के लिए सरकार ने जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि की एकीकृत विकास परियोजना के विस्तार को भी मंजूरी दी है। सोलन जिले में संचालित इस परियोजना के तहत मौजूदा ग्राम पंचायतों के साथ आसपास की अतिरिक्त पंचायतों में भी गतिविधियों का विस्तार किया जाएगा। इसके लिए 603 करोड़ रुपये की अतिरिक्त धनराशि मंजूर की गई है। इसके अलावा, एचपी शिवा परियोजना की अवधि दो साल बढ़ाकर जून 2030 तक करने का निर्णय लिया गया है। इन योजनाओं से कृषि और बागवानी क्षेत्र में विकास कार्यों को आगे बढ़ाने, किसानों को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में मदद मिलने की उम्मीद है।

## पशुपालन और बागवानी विभाग में 171 पदों पर भर्ती

किसानों और बागवानों तक सरकारी सेवाओं की पहुंच बेहतर बनाने के लिए मंत्रिमंडल ने पशुपालन तथा बागवानी विभागों में कुल 171 पद भरने की मंजूरी दी है।

पशुपालन विभाग में विभिन्न श्रेणियों के 116 पद भरे जाएंगे। वहीं, बागवानी विभाग में 40 बागवानी विस्तार अधिकारियों, 5 वरिष्ठ सहायकों और 10 बागवानी विकास अधिकारियों की नियुक्ति को मंजूरी मिली है। इन पदों के भरने से विभागीय कार्यों में तेजी आने और किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन तथा जरूरी सेवाएं उपलब्ध कराने में सहायता मिलने की संभावना है।

### किसानों के लिए क्यों अहम हैं ये फैसले?

दूध पर प्रोत्साहन राशि बढ़ाने से लेकर प्राकृतिक आपदा में नुकसान की भरपाई और कृषि परियोजनाओं के विस्तार तक, हिमाचल प्रदेश सरकार के ये फैसले ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। विशेष रूप से छोटे दुग्ध उत्पादकों के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन आय में सहारा बन सकता है, जबकि आपदा राहत से प्रभावित परिवारों को दोबारा सामान्य जीवन शुरू करने में मदद मिल सकती है।

हालांकि, दुग्ध प्रोत्साहन का लाभ लेने वाले किसानों को योजना की पात्रता, दूध आपूर्ति से संबंधित शर्तों और भुगतान प्रक्रिया की जानकारी संबंधित विभाग या मिल्कफेड से प्राप्त करनी चाहिए। कुल मिलाकर, इन फैसलों का लक्ष्य हिमाचल प्रदेश में डेयरी व्यवसाय, खेती और बागवानी को प्रोत्साहित करना तथा किसानों की आर्थिक मजबूती को बढ़ावा देना है।

# सरकार ने डेयरी किसानों को दिया दिवाली का तोहफा: दूध पर अब ₹6 प्रति लीटर मिलेगा बोनस




### भारत की 10 प्रमुख देशी गायों की नस्लें - जानें, पूरी जानकारी

भारत विश्व के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में से एक है। यहां पशुपालन केवल एक व्यवसाय नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। कृषि कार्यों के साथ-साथ पशुपालन किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करता है और उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाता है। देश में विभिन्न प्रकार की गायों की नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें देशी नस्लों का विशेष महत्व है। भारतीय नस्ल की गायें अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता, कम रखरखाव लागत, जलवायु अनुकूलन क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के लिए जानी जाती हैं। आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण देशी गायों के दूध की मांग तेजी से बढ़ रही है। A2 दूध को पाचन के लिए बेहतर माना जाता है और इसमें कई आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यही कारण है कि देशी

नस्ल की गायों का पालन किसानों के लिए लाभदायक साबित हो रहा है। आइए भारत की प्रमुख देशी गायों की नस्लों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

## 1. साहीवाल गाय

साहीवाल भारत की सबसे प्रसिद्ध और सर्वाधिक दूध देने वाली देशी नस्लों में से एक मानी जाती है। इसका मूल क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का साहीवाल जिला है, जिसके नाम पर इस नस्ल का नाम रखा गया है। भारत में यह नस्ल मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर भारत के कई हिस्सों में पाई जाती है। साहीवाल गाय का शरीर मजबूत, त्वचा ढीली और रंग लाल-भूरा या महोगनी लाल होता है। कुछ पशुओं में सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं। इस नस्ल की गायें गर्मी और परजीवी रोगों को सहन करने में सक्षम होती हैं। इनके थन अच्छी तरह विकसित होते हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन क्षमता अधिक रहती है। सामान्य परिस्थितियों में साहीवाल गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध दे सकती है। बेहतर प्रबंधन और संतुलित आहार मिलने पर कई गायें इससे भी अधिक उत्पादन करने में सक्षम होती हैं। डेयरी व्यवसाय के लिए यह नस्ल किसानों की पहली पसंद मानी जाती है।

## 2. गिर गाय

गिर गाय भारत की सबसे लोकप्रिय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध देशी नस्लों में शामिल है। इसका उद्गम गुजरात के गिर वन क्षेत्र में हुआ है। अपनी उत्कृष्ट दुग्ध उत्पादन क्षमता और मजबूत प्रतिरोधक शक्ति के कारण यह नस्ल ब्राजील, अमेरिका, मैक्सिको और अन्य देशों में भी काफी लोकप्रिय हो चुकी है। गिर गाय की पहचान इसके लंबे लटकते कान, उभरे हुए माथे और अर्धचंद्राकार मुड़े हुए सींगों से की जाती है। इसका रंग लाल, सफेद धब्बेदार लाल या गहरा भूरा हो सकता है। यह नस्ल सामान्यतः प्रतिदिन 15 से 20 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 4.5 से 5 प्रतिशत तक होती है। गिर गायों की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अच्छी होती है और ये कठिन जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं।

## 3. लाल सिंधी गाय

लाल सिंधी नस्ल का उद्गम पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में हुआ था, लेकिन वर्तमान में भारत के कई राज्यों में इसका पालन किया जाता है। यह नस्ल अपने उच्च गुणवत्ता वाले दूध और अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है। लाल सिंधी गाय का रंग गहरे लाल से लेकर हल्के लाल और पीले-लाल रंग तक हो सकता है। शरीर मजबूत तथा सींग अपेक्षाकृत छोटे और मोटे होते हैं। कुछ पशुओं के माथे और गर्दन पर सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं। यह नस्ल औसतन 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन कर सकती है। एक दुग्धकाल में इसका कुल दूध उत्पादन 1100 से 2600 किलोग्राम तक हो सकता है। इसके दूध में लगभग 4.5 प्रतिशत वसा पाई जाती है, जिससे यह डेयरी उद्योग के लिए लाभदायक मानी जाती है।

## 4. हरियाणा गाय

हरियाणा नस्ल उत्तर भारत की प्रमुख दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है। इसका उपयोग दूध उत्पादन के साथ-साथ कृषि कार्यों के लिए शक्तिशाली बैलों के उत्पादन में भी किया जाता है। इस नस्ल का प्रमुख प्रजनन क्षेत्र हरियाणा राज्य और आसपास के इलाके हैं। हरियाणा गाय का रंग सामान्यतः सफेद या हल्का धूसर होता है। शरीर मजबूत, पैर लंबे और सींग छोटे होते हैं। यह नस्ल कठोर जलवायु में भी आसानी से जीवित रह सकती है। दूध उत्पादन की बात करें तो हरियाणा गाय प्रतिदिन लगभग 8 से 15 लीटर तक दूध दे सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह नस्ल अपनी सहनशीलता और कम रखरखाव लागत के कारण काफी लोकप्रिय है।

## 5. कांकरेज गाय

कांकरेज नस्ल गुजरात और राजस्थान की प्रमुख देशी गायों में से एक है। इसका नाम गुजरात के कांकरेज क्षेत्र से लिया गया है। यह नस्ल दूध उत्पादन और कृषि कार्य दोनों के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

कांकरेज गाय का रंग सिल्वर ग्रे, आयरन ग्रे या स्टील ब्लैक होता है। इसके बड़े और वीणा के आकार के सींग इसकी विशेष पहचान हैं। शरीर मजबूत और मांसपेशियां विकसित होती हैं। यह नस्ल सामान्यतः 10 से 15 लीटर दूध प्रतिदिन देती है, जबकि कुछ उच्च गुणवत्ता वाली गायें 18 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती हैं। यह नस्ल गर्मी, टिक जनित रोगों और कई संक्रामक बीमारियों के प्रति अच्छी प्रतिरोधक क्षमता रखती है।

## 6. हल्लीकर गाय

हल्लीकर नस्ल दक्षिण भारत विशेषकर कर्नाटक राज्य की प्रमुख नस्लों में गिनी जाती है। इसे मैसूर नस्ल के नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल मुख्य रूप से कृषि कार्यों और सीमित दुग्ध उत्पादन के लिए जानी जाती है। हल्लीकर गाय का रंग सफेद, धूसर या हल्का भूरा होता है। इसके सींग लंबे और पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। शरीर चुस्त-दुरुस्त और सहनशील होता है। यह नस्ल प्रतिदिन लगभग 5 से 8 लीटर दूध देती है। हालांकि इसका दुग्ध उत्पादन अन्य नस्लों की तुलना में कम है, लेकिन इसके दूध में वसा की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक होती है।

## 7. बद्री गाय

बद्री गाय उत्तराखंड की एक महत्वपूर्ण देशी नस्ल है, जिसे राज्य की पहली प्रमाणित देशी गाय नस्ल का दर्जा प्राप्त है। यह मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी आसानी से जीवन यापन कर सकती है। बद्री गाय आकार में छोटी, स्वभाव से शांत और कम संसाधनों में जीवित रहने वाली नस्ल है। इसका रंग काला, भूरा, लाल, सफेद या धूसर हो सकता है। इस नस्ल के पशुओं में विशिष्ट कूबड़ और लंबी पूंछ देखी जाती है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार बद्री गाय के दूध में A2 बीटा-केसीन प्रोटीन की मात्रा बहुत अधिक पाई जाती है। यह गाय प्रतिदिन लगभग 1 से 3 लीटर दूध देती है, लेकिन इसके दूध की गुणवत्ता इसे विशेष बनाती है।

## 8. पुंगनूर गाय

पुंगनूर गाय आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध बौनी नस्ल है और इसे दुनिया की सबसे छोटी गाय नस्लों में से एक माना जाता है। अपने छोटे आकार और कम रखरखाव खर्च के कारण यह किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है। पुंगनूर गाय विभिन्न रंगों में पाई जाती है, जिनमें सफेद, लाल, भूरा और काला प्रमुख हैं। इसका शरीर छोटा लेकिन मजबूत होता है। यह नस्ल सीमित चारे में भी अच्छी तरह जीवित रह सकती है। यह गाय प्रतिदिन लगभग 3 से 5 लीटर दूध देती है। इसके दूध में वसा की मात्रा लगभग 8 प्रतिशत तक हो सकती है, जो सामान्य गायों की तुलना में काफी अधिक है। यही कारण है कि इसका दूध बाजार में विशेष मांग रखता है।

## 9. राठी गाय

राठी गाय राजस्थान की एक प्रसिद्ध दुग्ध नस्ल है, जिसका उद्गम बीकानेर और गंगानगर क्षेत्र में माना जाता है। यह नस्ल कठोर मरुस्थलीय परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए जानी जाती है। राठी गाय का रंग सामान्यतः चितकबरा होता है और इसकी शारीरिक बनावट साहीवाल नस्ल से काफी मिलती-जुलती है। यह नस्ल अत्यधिक गर्मी और सीमित चारे की स्थिति को भी आसानी से सहन कर सकती है। उचित देखभाल और पोषण मिलने पर राठी गाय प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध देने में सक्षम होती है। यह नस्ल राजस्थान के पशुपालकों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है।

## 10. थारपारकर गाय

थारपारकर भारत और पाकिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक प्रमुख देशी नस्ल है। भारत में इसका पालन मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्रों में किया जाता है। यह नस्ल गर्म और शुष्क जलवायु के लिए विशेष रूप से अनुकूलित है।
थारपारकर गाय का रंग सफेद या हल्का धूसर होता है। इसका शरीर मजबूत, पैर सुदृढ़ और त्वचा ढीली

होती है। यह नस्ल कम पानी और सीमित चारे में भी अच्छा प्रदर्शन करती है। थारपारकर गाय प्रतिदिन लगभग 10 से 18 लीटर दूध उत्पादन कर सकती है। इसके दूध की गुणवत्ता अच्छी होती है और यह नस्ल डेयरी तथा प्रजनन दोनों उद्देश्यों के लिए उपयोगी मानी जाती है।

## निष्कर्ष

भारत की देशी गायों की नस्लें केवल दूध उत्पादन का स्रोत नहीं हैं, बल्कि देश की कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जैव विविधता की महत्वपूर्ण धरोहर भी हैं। साहीवाल, गिर, लाल सिंधी, हरियाणा, कांकरेज, हल्लीकर, बद्री, पुंगनूर, राठी और थारपारकर जैसी नस्लें अपनी विशिष्ट विशेषताओं, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उच्च गुणवत्ता वाले A2 दूध के कारण विशेष महत्व रखती हैं। आज जब स्वास्थ्यवर्धक दूध और टिकाऊ पशुपालन की मांग बढ़ रही है, तब देशी गायों का संरक्षण और संवर्धन पहले से अधिक आवश्यक हो गया है। यदि किसान वैज्ञानिक पद्धति से इन नस्लों का पालन करें, तो वे डेयरी व्यवसाय से बेहतर आय अर्जित कर सकते हैं और देश की पशुधन संपदा को भी मजबूत बना सकते हैं।

सकें।

आगामी रबी मौसम की तैयारियों के लिए 28 और 29 सितंबर 2026 को दिल्ली के पूसा संस्थान में रबी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें राज्यों के कृषि मंत्री और अधिकारी अपनी रबी कार्य योजनाओं के साथ शामिल होंगे। संभावित बुवाई क्षेत्र के आधार पर बीज, उर्वरक और अन्य कृषि इनपुट की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समन्वित योजना तैयार की जाएगी।

# देशी बनाम विदेशी गाय: कौन है बेहतर और कैसे करें सही पहचान?




दुग्ध उत्पादन और पशुपालन से अधिक लाभ कमाने के लिए सही नस्ल की गाय का चयन सबसे महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। अक्सर कई पशुपालक केवल गाय की कीमत या तत्काल मिलने वाले दूध की मात्रा देखकर खरीदारी कर लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें पता चलता है कि पशु उनकी जलवायु, प्रबंधन क्षमता या उत्पादन की जरूरतों के अनुरूप नहीं है। ऐसे में आर्थिक नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए नई गाय खरीदने से पहले उसकी नस्ल, स्वास्थ्य और उत्पादन क्षमता की

सही जानकारी होना बेहद जरूरी है। यदि कोई पशुपालक डेयरी व्यवसाय शुरू करना चाहता है, तो उसे देशी, विदेशी और क्रॉसब्रीड गायों के बीच का अंतर समझना चाहिए। सही नस्ल का चयन न केवल दूध उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि पशु के रखरखाव की लागत को भी नियंत्रित करता है। अच्छी नस्ल की गाय लंबे समय तक बेहतर उत्पादन देती है और बीमारियों का खतरा भी अपेक्षाकृत कम रहता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ हमेशा सलाह देते हैं कि गाय खरीदते समय उसकी नस्ल की पहचान सबसे पहले की जाए।

## शारीरिक बनावट से गाय की नस्ल कैसे पहचानें?

गाय की नस्ल पहचानने का सबसे आसान तरीका उसकी शारीरिक बनावट को ध्यान से देखना है। देशी और विदेशी नस्ल की गायों में कई ऐसे बाहरी अंतर होते हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति भी आसानी से पहचान सकता है। देशी गाय की पीठ पर स्पष्ट कूबड़ होता है, जबकि विदेशी नस्ल की गायों में कूबड़ नहीं होता। इसी वजह से देशी गायों को कूबड़धारी और विदेशी गायों को कूबड़ रहित नस्ल कहा जाता है। इसके अलावा देशी गाय की गर्दन अपेक्षाकृत मजबूत और शरीर संतुलित दिखाई देता है। विदेशी नस्ल की गाय का शरीर लंबा और भारी होता है, जिससे वह अधिक दूध उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कमर की बनावट में भी अंतर होता है। देशी गाय की कमर हल्की झुकी हुई होती है, जबकि विदेशी गाय की कमर अधिक सीधी और चौड़ी दिखाई देती है। इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखकर किसी भी पशुपालक को गाय की नस्ल पहचानने में काफी आसानी हो सकती है।

## सींग, त्वचा और शरीर की संरचना से पहचान के आसान तरीके

गाय की नस्ल पहचानने में उसके सींग, त्वचा और शरीर की संरचना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देशी गाय के सींग सामान्यतः ऊपर की ओर उठे हुए या हल्के मुड़े होते हैं, जबकि विदेशी नस्ल की गायों के सींग सीधे या बाहर की ओर फैले हुए दिखाई देते हैं। इसी प्रकार देशी गाय की त्वचा अपेक्षाकृत मोटी और ढीली होती है। इसके गले के नीचे त्वचा की मोटी परत, जिसे डयूलैप कहा जाता है, स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह विशेषता देशी नस्ल की पहचान का प्रमुख संकेत मानी जाती है। दूसरी ओर विदेशी गाय की त्वचा पतली, मुलायम और कसी हुई होती है। शरीर की ऊंचाई, पूंछ की लंबाई और पुट्ठे की बनावट में भी अंतर देखने को मिलता है। देशी गाय का पुट्ठा हल्का ढलानदार होता है, जबकि विदेशी गाय का पुट्ठा अधिक समतल और चौड़ा दिखाई देता है। इन संकेतों के आधार पर पशुपालक बिना किसी विशेष उपकरण के भी गाय की नस्ल का अनुमान लगा सकते हैं।

## थन की बनावट और दूध उत्पादन क्षमता का संबंध

गाय के थन की बनावट उसके दूध उत्पादन की क्षमता का महत्वपूर्ण संकेत मानी जाती है। सामान्यतः विदेशी दुधारू नस्लों का थन बड़ा, विकसित और संतुलित होता है, जिससे उनमें अधिक मात्रा में दूध उत्पादन की क्षमता होती है। वहीं देशी गायों का थन अपेक्षाकृत छोटा होता है, लेकिन उनका दूध अधिक पौष्टिक और वसा युक्त माना जाता है। यदि कोई पशुपालक डेयरी व्यवसाय के लिए गाय खरीद रहा है, तो उसे थनों की स्थिति, आकार और स्वास्थ्य की अच्छी तरह जांच करनी चाहिए। थनों में किसी प्रकार की सूजन, चोट या संक्रमण भविष्य में दूध उत्पादन को प्रभावित कर सकता है। अच्छी नस्ल की स्वस्थ गाय का थन साफ, संतुलित और चारों स्तन समान आकार के होने चाहिए। इसके अलावा दूध निकालते समय पशु का व्यवहार भी महत्वपूर्ण होता है। शांत स्वभाव वाली गाय का दुग्ध उत्पादन और प्रबंधन दोनों आसान होते हैं।

## देशी और विदेशी गाय के दूध उत्पादन में

## क्या अंतर है?

दूध उत्पादन के आधार पर देशी और विदेशी गायों के बीच स्पष्ट अंतर देखा जाता है। सामान्य परिस्थितियों में देशी नस्ल की गाय प्रतिदिन लगभग 6 से 8 किलोग्राम दूध देती है, हालांकि कुछ उन्नत नस्लें इससे अधिक उत्पादन भी कर सकती हैं। दूसरी ओर जर्सी, होल्स्टीन फ्रिजियन (HF) जैसी विदेशी नस्लें प्रतिदिन 15 से 30 किलोग्राम या उससे भी अधिक दूध देने की क्षमता रखती हैं। यही कारण है कि व्यावसायिक डेयरी फार्मों में विदेशी और क्रॉसब्रीड गायों का अधिक पालन किया जाता है। हालांकि केवल दूध की मात्रा ही महत्वपूर्ण नहीं होती। देशी गाय के दूध में वसा (फैट) और कई पोषक तत्व अधिक पाए जाते हैं, जिससे घी, मक्खन, दही और अन्य दुग्ध उत्पादों के लिए इसकी मांग बनी रहती है। इसलिए पशुपालक को अपनी आवश्यकता के अनुसार यह तय करना चाहिए कि उसे अधिक मात्रा में दूध चाहिए या अधिक वसा वाला दूध।

## मौसम सहनशीलता और रोग प्रतिरोधक क्षमता में अंतर

भारत जैसे विविध जलवायु वाले देश में गाय की मौसम सहन करने की क्षमता भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। देशी नस्ल की गायें भारतीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुई हैं, इसलिए वे अधिक गर्मी, सर्दी और बदलते मौसम को आसानी से सहन कर लेती हैं। इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिससे इनके इलाज पर कम खर्च आता है। इनका स्वभाव सामान्यतः शांत होता है और ये सीमित संसाधनों में भी अच्छा प्रदर्शन करती हैं।

इसके विपरीत विदेशी नस्ल की गायें अधिक दूध उत्पादन तो करती हैं, लेकिन उन्हें संतुलित आहार, साफ-सुथरा वातावरण और बेहतर प्रबंधन की आवश्यकता होती है। अत्यधिक गर्मी या आर्द्रता का प्रभाव इनके स्वास्थ्य और दूध उत्पादन पर पड़ सकता है। इसलिए विदेशी नस्ल की गाय खरीदने से पहले पशुपालक को अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों का भी ध्यान रखना चाहिए।

## भारत की प्रमुख देशी और विदेशी गायों की नस्लें

भारत में कई उत्कृष्ट देशी नस्लें पाई जाती हैं, जो अपनी सहनशीलता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और गुणवत्तापूर्ण दूध के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें गीर, साहिवाल, लाल सिंधी, थारपारकर और राठी प्रमुख हैं। गीर और साहिवाल नस्लें विशेष रूप से अधिक दूध उत्पादन के लिए जानी जाती हैं। वहीं विदेशी नस्लों में जर्सी, होल्स्टीन फ्रिजियन (HF) और ब्राउन स्विस सबसे लोकप्रिय हैं। होल्स्टीन फ्रिजियन दुनिया की सबसे अधिक दूध देने वाली नस्लों में गिनी जाती है, जबकि जर्सी गाय अपेक्षाकृत कम आकार की होने के बावजूद अधिक वसा वाला दूध देती है। वर्तमान समय में कई डेयरी फार्म क्रॉसब्रीड गायों का पालन भी कर रहे हैं। इन क्रॉसब्रीड पशुओं में देशी गायों की सहनशीलता और विदेशी नस्लों की उच्च दूध उत्पादन क्षमता का बेहतर संतुलन देखने को मिलता है। यही कारण है कि आधुनिक डेयरी व्यवसाय में इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

## गाय खरीदते समय किन बातों का रखें विशेष ध्यान?

गाय खरीदते समय केवल उसकी वर्तमान दूध देने की क्षमता देखकर निर्णय लेना सही नहीं माना जाता। पशुपालक को सबसे पहले उसकी नस्ल, उम्र, स्वास्थ्य, पिछले ब्यांत का रिकॉर्ड और टीकाकरण की स्थिति की जांच करनी चाहिए। इसके अलावा गाय के शरीर की बनावट, थनों की स्थिति, चलने-फिरने की क्षमता और स्वभाव का भी निरीक्षण करना जरूरी है। यदि संभव हो तो गाय का दूध निकालकर उसकी मात्रा और गुणवत्ता का भी परीक्षण करना चाहिए। किसी भी प्रकार की बीमारी, लंगड़ापन या थनों में संक्रमण जैसी समस्याओं वाले पशु से बचना चाहिए।

विशेषज्ञों की सलाह है कि पशु खरीदते समय पशु चिकित्सक या पशुपालन विशेषज्ञ को साथ ले जाना अधिक सुरक्षित रहता है। सही नस्ल और स्वस्थ गाय

का चयन लंबे समय तक बेहतर दूध उत्पादन, कम रखरखाव लागत और अधिक आर्थिक लाभ सुनिश्चित करता है। यदि सोच-समझकर खरीदारी की जाए, तो डेयरी व्यवसाय को सफल और लाभदायक बनाना काफी आसान हो सकता है।

# कम खर्च में तैयार करें पशुओं का पौष्टिक चारा, दूध उत्पादन भी बढ़ेगा




## गर्मियों में पशुओं के लिए पौष्टिक चारा बनाना क्यों जरूरी

गर्मियों के मौसम में पशुपालकों को सबसे बड़ी चुनौती हरे चारे की कमी और महंगे पशु आहार की होती है। तापमान बढ़ने के साथ खेतों में हरा चारा कम हो जाता है, जबकि बाजार में मिलने वाला संतुलित पशु आहार काफी महंगा पड़ता है। इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और वजन पर दिखाई देता है।

कई बार पोषण की कमी के कारण पशु कमजोर होने लगते हैं और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। ऐसे समय में किसान यदि कम लागत में पौष्टिक चारा तैयार कर लें, तो पशुपालन को लाभकारी बनाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार एक ऐसी वैज्ञानिक तकनीक है, जो सूखे भूसे को पौष्टिक पशु आहार में बदल सकती है। यह तरीका आसान होने के साथ-साथ बेहद किफायती भी माना जाता है।

## देश में चारे की कमी बनी बड़ी समस्या

भारत दुनिया के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में शामिल है। देश में 53 करोड़ से अधिक पशुधन मौजूद है, लेकिन इनके लिए पर्याप्त पौष्टिक चारे की उपलब्धता आज भी बड़ी समस्या बनी हुई है। अधिकांश किसान गेहूं और धान के भूसे पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। हालांकि, सामान्य भूसे में पोषक तत्व बहुत कम होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा करीब 3 प्रतिशत या उससे भी कम होती है, जिससे पशुओं की पोषण जरूरत पूरी नहीं हो पाती। लगातार ऐसे चारे का उपयोग करने से पशुओं की वृद्धि रुक सकती है और दूध उत्पादन भी प्रभावित होता है। यही वजह है, कि वैज्ञानिक लंबे समय से भूसे की गुणवत्ता सुधारने पर जोर देते रहे हैं। यूरिया उपचार इसी दिशा में एक कारगर उपाय माना जाता है।

## यूरिया उपचारित भूसा क्यों है बेहतर विकल्प

विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार करने से उसकी पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया में यूरिया से बनने वाली अमोनिया भूसे के रेशों को मुलायम बनाती है और उसकी पाचन क्षमता को बेहतर करती है। सामान्य भूसे में जहां प्रोटीन की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है, वहीं उपचार के बाद यह 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है।

इसके अलावा भूसे की ऊर्जा क्षमता और पाचनशीलता में भी सुधार होता है। उपचारित भूसा स्वाद में भी बेहतर हो जाता है, जिससे पशु इसे आसानी से खाते हैं। यही कारण है कि पशुपालकों के बीच यह तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कम खर्च में पौष्टिक चारा तैयार होने से किसानों की लागत घटती है और पशुओं को बेहतर पोषण मिल

पाता है।

## उपचारित भूसे से पशुपालकों को मिलते हैं कई फायदे

यूरिया उपचारित भूसा पशुओं के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित होता है। उपचार के बाद भूसा नरम और स्वादिष्ट हो जाता है, जिससे पशु इसे चाव से खाते हैं और चारे की बर्बादी कम होती है। अधिक पोषण मिलने से पशुओं की सेहत बेहतर रहती है और दूध उत्पादन में भी सुधार देखा जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह का चारा खिलाने से महंगे दाने और सघन आहार की जरूरत लगभग 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इससे पशुपालकों का खर्च घटता है और मुनाफा बढ़ता है। बछड़ों और बछड़ियों को यह चारा खिलाने पर उनका वजन तेजी से बढ़ता है और शरीर मजबूत बनता है। गर्मियों में जब हरे चारे की भारी कमी होती है, तब यह तकनीक पशुपालकों के लिए बड़ी राहत साबित हो सकती है।

## सामान्य और उपचारित भूसे में कितना अंतर

सामान्य भूसे और यूरिया उपचारित भूसे के बीच पोषण स्तर में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। साधारण भूसे में प्रोटीन केवल 3 से 3.5 प्रतिशत तक होता है, जबकि उपचारित भूसे में यह बढ़कर 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। पाच्य प्रोटीन की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है, जिससे पशु इसे बेहतर तरीके से पचा पाते हैं। ऊर्जा स्तर सामान्य भूसे में लगभग 40 से 45 प्रतिशत होता है, लेकिन उपचारित भूसे में यह 50 से 55 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। सबसे बड़ा सुधार पाचनशीलता में देखा जाता है। सामान्य भूसे की पाचन क्षमता जहां 40 से 45 प्रतिशत रहती है, वहीं उपचार के बाद यह 70 से 75 प्रतिशत तक हो सकती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक इसे पशुपालन के लिए बेहद उपयोगी तकनीक मानते हैं।

## ऐसे करें भूसे का यूरिया उपचार

भूसे का यूरिया उपचार करना बेहद आसान है और किसान इसे अपने घर या खेत पर ही कर सकते हैं। सबसे पहले 4 किलोग्राम यूरिया को 40 लीटर साफ पानी में अच्छी तरह घोल लें। इसके बाद लगभग 1 क्विंटल सूखे भूसे को समतल जमीन पर 3 से 4 इंच मोटी परत में फैला दें। अब तैयार घोल को स्प्रेयर या फव्वारे की मदद से भूसे पर समान रूप से छिड़कें, ताकि पूरा भूसा हल्का गीला हो जाए। इसके बाद भूसे को पैरों से दबाकर सघन करें। इसी तरह एक के ऊपर एक कई परतें बनाई जा सकती हैं और हर परत पर घोल का छिड़काव करना जरूरी होता है। अंत में पूरे ढेर को प्लास्टिक शीट से अच्छी तरह ढक दें, ताकि हवा अंदर न जा सके। गर्मियों में इसे कम से कम 3 सप्ताह और सर्दियों में लगभग 4 सप्ताह तक बंद अवस्था में रखना चाहिए। इस दौरान यूरिया से अमोनिया बनती है, जो भूसे को मुलायम और पौष्टिक बनाती है।

## पशुओं को कैसे खिलाएं उपचारित चारा

जब उपचार प्रक्रिया पूरी हो जाए, तब जरूरत के अनुसार भूसे को ढेर से निकालकर उपयोग किया जा सकता है। शुरुआत में इस भूसे को लगभग आधे घंटे तक खुली हवा में फैला देना चाहिए, ताकि अतिरिक्त अमोनिया निकल जाए। इसके बाद इसे पशुओं को खिलाया जा सकता है। शुरुआत में पशुओं को थोड़ी मात्रा में यह चारा देना चाहिए, ताकि वे इसकी आदत डाल सकें।

धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है। एक बार पशु इसके स्वाद के अभ्यस्त हो जाएं, तो इसे सीधे भी खिलाया जा सकता है। उपचारित भूसा सूखे मौसम में लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे पूरे साल चारे की उपलब्धता बनी रहती है। यही कारण है कि यह तकनीक छोटे और मध्यम पशुपालकों के लिए बेहद उपयोगी मानी जाती है।

## चारा तैयार करते समय बरतें जरूरी

## सावधानियां

यूरिया उपचारित भूसा तैयार करते समय कुछ जरूरी सावधानियों का पालन करना बेहद आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरिया घोल को हमेशा पशुओं और बच्चों की पहुंच से दूर रखा जाए। यूरिया को कभी भी सीधे पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए, क्योंकि यह नुकसानदायक हो सकता है। उपचारित भूसे को कम से कम 3 सप्ताह बाद ही उपयोग में लाना चाहिए, ताकि प्रक्रिया पूरी तरह सफल हो सके। प्लास्टिक कवर को अच्छी तरह बंद रखना जरूरी है, क्योंकि हवा अंदर जाने से उपचार प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा भूसे पर यूरिया घोल का समान रूप से छिड़काव करना भी बेहद जरूरी होता है। विशेषज्ञों का मानना है, कि यदि किसान फसल कटाई के समय ही भूसे का उपचार कर लें, तो पूरे साल पौष्टिक चारे की चिंता काफी हद तक खत्म हो सकती है। सही विधि और सावधानी के साथ अपनाई गई यह तकनीक पशुपालकों के लिए कम खर्च में अधिक मुनाफा दिलाने का प्रभावी उपाय साबित हो सकती है।

MERIKHETI

# किसानो की बात
# मेरी खेती के साथ



www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010